ರಚನಾ

ಎನ್.ಸಿ.ಎಫ್–2005

ಹೊಸ ಪಠ್ಯ ಪುಸ್ತಕ ಆಧಾರಿತ
ತರಬೇತಿ ಸಾಹಿತ್ಯ
2013–14

ತರಗತಿ : 9

ವಿಷಯ : ಹಿಂದಿ

ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಮಾಧ್ಯಮಿಕ ಶಿಕ್ಷಣ ಅಭಿಯಾನ,
ಬೆಂಗಳೂರು.

ಮತ್ತು

ರಾಜ್ಯ ಶಿಕ್ಷಣ ಸಂಶೋಧನೆ ಮತ್ತು ತರಬೇತಿ ಇಲಾಖೆ, 100 ಅಡಿ ವರ್ತುಲ ರಸ್ತೆ,
ಬನಶಂಕರಿ 3ನೇ ಹಂತ, ಹೊಸಕೆರೆಹಳ್ಳಿ, ಬೆಂಗಳೂರು–560085.

1.	ಹೊಸ ಪಠ್ಯಪುಸ್ತಕಗಳ ಆಧಾರಿತ ತರಬೇತಿ ಸಾಹಿತ್ಯ	:	ಹಿಂದಿ, 9ನೇ ತರಗತಿ
2.	ಪ್ರಕಟಣೆ	:	ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಮಾಧ್ಯಮಿಕ ಶಿಕ್ಷಣ ಅಭಿಯಾನ, ಬೆಂಗಳೂರು–560001 ರಾಜ್ಯ ಶಿಕ್ಷಣ ಸಂಶೋಧನೆ ಮತ್ತು ತರಬೇತಿ ಇಲಾಖೆ, 100 ಅಡಿ ವರ್ತುಲ ರಸ್ತೆ, ಹೊಸಕೆರೆಹಳ್ಳಿ, ಬನಶಂಕರಿ 3ನೇ ಹಂತ, ಬೆಂಗಳೂರು – 560 085.
3.	ಮುದ್ರಣ ವರ್ಷ	:	2013–14
4.	ಪ್ರತಿಗಳ ಸಂಖ್ಯೆ	:	3000
5.	ಮುದ್ರಕರು	:	ಭಾಗ್ಯಂ ಬೈಂಡಿಂಗ್ ವರ್ಕ್ಸ್, ನಂ. 25/1, 1ನೇ ಮುಖ್ಯ ರಸ್ತೆ, 1ನೇ ಅಡ್ಡರಸ್ತೆ, ಹೊಸ ಟಿಂಬರ್ ಲೇಔಟ್, ಮೈಸೂರು ರಸ್ತೆ, ಬೆಂಗಳೂರು – 560 026.

ಮುನ್ನುಡಿ

2013–14ನೇ ಸಾಲಿನಿಂದ NCF–2005ರ ಆಧಾರದ ಮೇಲೆ ಕರ್ನಾಟಕ ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿಯೂ ಹೊಸ ಪಠ್ಯಕ್ರಮವನ್ನು ಜಾರಿಗೊಳಿಸಲಾಗುತ್ತಿದ್ದು, ಪ್ರಸಕ್ತ ಶೈಕ್ಷಣಿಕ ವರ್ಷದಲ್ಲಿ (2013–14) 6 ಮತ್ತು 9ನೇ ತರಗತಿಗಳಿಗೆ ಪರಿಷ್ಕೃತ ಪಠ್ಯಪುಸ್ತಕಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿ ಅನುಷ್ಠಾನಗೊಳಿಸಲಾಗುತ್ತಿದೆ.

NCF–2005ರ ಪರಿಕಲ್ಪನೆಗಳನ್ನು ಈ ಪರಿಷ್ಕೃತ ಪಠ್ಯಕ್ರಮ, ಪಠ್ಯವಸ್ತು ಮತ್ತು ಪಠ್ಯಪುಸ್ತಕಗಳಲ್ಲಿ ಅಳವಡಿಸಲಾಗಿದೆ. ಪರಿಷ್ಕರಣೆಯಲ್ಲಿ ಮೂಡಿಬಂದಿರುವ ಹೊಸ ಪರಿಕಲ್ಪನೆಗಳ ಬಗ್ಗೆ ಮತ್ತು ಬೋಧನಾ–ಕಲಿಕಾ ಸನ್ನಿವೇಶದಲ್ಲಿ ಶಿಕ್ಷಕರು ಅನುಸರಿಸಬೇಕಾಗಿರುವ ವಿಧಿ ವಿಧಾನಗಳ ಬಗ್ಗೆ ಮನವರಿಕೆ ಮಾಡಿಕೊಡುವುದು, ನಿರಂತರ ಮತ್ತು ವ್ಯಾಪಕ ಮೌಲ್ಯಮಾಪನವನ್ನು ಅಳವಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು ಹಾಗೂ ರಚನಾವಾದದ ಬಗ್ಗೆ ಅರಿವು ಮೂಡಿಸುವುದು, ಅತ್ಯಂತ ಅವಶ್ಯವಾಗಿದೆ. ಈ ದಿಸೆಯಲ್ಲಿ 6 ಮತ್ತು 9ನೇ ತರಗತಿಯ ಪರಿಷ್ಕೃತ ಪಠ್ಯಪುಸ್ತಕಗಳನ್ನು ಕಲಿಕೆ ಮತ್ತು ಬೋಧನೆಗೆ ಅಳವಡಿಸಲು ಮಾರ್ಗದರ್ಶಿ ರೂಪದಲ್ಲಿ ಶಿಕ್ಷಕ ತರಬೇತಿ ಮಾಡ್ಯೂಲನ್ನು ರಚಿಸಲಾಗಿದೆ. 6ನೇ ತರಗತಿಗೆ ಒಂದು ಸಂಪೂರ್ಣ ಮಾಡ್ಯೂಲ್ ತಯಾರಿಕೆಯಾಗಿದ್ದು, 9ನೇ ತರಗತಿಗೆ ವಿಷಯವಾರು ಶಿಕ್ಷಕರ ತರಬೇತಿ ಸಾಹಿತ್ಯ ರೂಪಿಸಲಾಗಿದೆ.

ಈ ತರಬೇತಿ ಸಾಹಿತ್ಯವನ್ನು ಮುಂಬರುವ ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಶಿಕ್ಷಕರಿಗೆ ತರಬೇತಿ ನೀಡುವ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಬಳಕೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲಾಗುವುದು. ಈ ಪುಸ್ತಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಅಳವಡಿಸಿರುವ ಅಂಶಗಳು ಶಿಕ್ಷಕ ಸಮುದಾಯ ತಮ್ಮ ಬೋಧನಾ ಮತ್ತು ಕಲಿಕಾ ಸನ್ನಿವೇಶದಲ್ಲಿ ಅಳವಡಿಸಿ ತರಗತಿಗಳಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಕಾರ್ಯಕ್ಷಮತೆಯನ್ನು ಉಂಟು ಮಾಡುವಿರೆಂದು ಆಶಿಸಲಾಗಿದೆ.

(ಹೆಚ್. ಎಸ್. ರಾಮರಾವ್)
ನಿರ್ದೇಶಕರು
ಸಂಶೋಧನೆ ಮತ್ತು ತರಬೇತಿ

आशय

प्रस्तुत प्रशिक्षण द्वारा हिंदी शिक्षकों को कक्षा में मार्गदर्शन तथा मूल्यांकन में सहायता उपलब्ध कराना ही हमारा उद्देश्य है।

इस पुस्तक में दिए गए विचारों को एक सोपान मानकर शिक्षक को अपनी मंजिल की ऊँचाई को तय करने में सहायता प्राप्त कराना तथा मार्गदर्शन के स्तर को उत्तम से उत्तम बनाना ही हमारा प्रयास है। विविध परिवर्तनों तथा नवीनताओं से युक्त इस नयी पाठ्यपुस्तक के पठन–पाठन को रोचक बनाने में हमारी सफलता सिक्षकों द्वारा इसे सही दिया में स्वीकार करने में निहित है। आशा है कि हमारा प्रयास शिक्षकों को सहर्ष स्वीकार होगा।

अध्यक्ष

रचना प्रशिक्षण संसाधक समिति

ಪರಿಕಲ್ಪನೆ ಮತ್ತು ಮಾರ್ಗದರ್ಶನ

ಶ್ರೀ ಹೆಚ್.ಎಸ್. ರಾಮರಾವ್,
ನಿರ್ದೇಶಕರು, ಡಿಎಸ್ಇಆರ್ಟಿ, ಬೆಂಗಳೂರು

ಶ್ರೀಮತಿ ಯಶೋಧ ಬೋಪಣ್ಣ,
ಸಹ ನಿರ್ದೇಶಕರು, ಡಿಎಸ್ಇಆರ್ಟಿ, ಬೆಂಗಳೂರು

ಶ್ರೀಮತಿ ಸಿರಿಯಣ್ಣನವರ ಲಲಿತ ಚಂದ್ರಶೇಖರ
ಡಿಎಸ್ಇಆರ್ಟಿ, ಬೆಂಗಳೂರು

ರಚನಾ

ಹಿಂದಿ ಸಾಹಿತ್ಯ ರಚನಾ ತಂಡ

ಅಧ್ಯಕ್ಷರು :

ಡಾ॥ ಬಿ. ನರಸಿಂಹ ಮೂರ್ತಿ
ಅಸೋಸಿಯೇಟ್ ಪ್ರೊಫೆಸರ್
ಶ್ರೀ ಕೊಂಗಾಡಿಯಪ್ಪ ಪದವಿ ಕಾಲೇಜು
ದೊಡ್ಡಬಳ್ಳಾಪುರ – 561203

ಸದಸ್ಯರು :

ಡಾ॥ ಪದ್ಮಿನಿ ಪಿ.ವಿ.
ಹಿಂದಿ ಅಧ್ಯಾಪಕಿ
ಸರ್ಕಾರಿ ಬಾಲಕಿಯರ ಪ್ರೌಢಶಾಲೆ
ನಂಜನ ಗೂಡು (ತಾ),
ಮೈಸೂರು (ಜಿಲ್ಲೆ)

ಶ್ರೀ ಶಶಿಧರ ಸಿಂಗ್
ಹಿಂದಿ ಅಧ್ಯಾಪಕರು
ಸರ್ಕಾರಿ ಪ್ರೌಢಶಾಲೆ, ಚಂದಗಾಲು
ಕೆ.ಆರ್. ನಗರ (ತಾ),
ಮೈಸೂರು (ಜಿಲ್ಲೆ)

ಡಾ॥ ಟಿ. ಶುಭಾನಂದ
ಹಿಂದಿ ಅಧ್ಯಾಪಕರು
ಗುರುದೇವ ಪ್ರೌಢಶಾಲೆ
ಕೊಟ್ಟೂರು – 583134.
ಬಳ್ಳಾರಿ (ಜಿಲ್ಲೆ)

ಕಾರ್ಯಕ್ರಮ ನಿರ್ವಹಣೆ :

ಶ್ರೀ ಬಸಪ್ಪ ಹೆಚ್. ಎಂ.
ಹಿರಿಯ ಸಹಾಯಕ ನಿರ್ದೇಶಕರು
ಡಿ.ಎಸ್.ಇ.ಆರ್.ಟಿ. ಬೆಂಗಳೂರು

रचना

प्रशिक्षण – अनुक्रमणिका

I.	राष्ट्रीय पाठ्यक्रम का ढाँचा – 2005 (N.C.F.)	7
II.	शिक्षण के मूल अधिकार – (R.T.E.) 2009	9
III.	निरंतर तथा व्यापक मूल्यांकन (C.C.E.)	20
IV.	संकलनात्मक मूल्यांकन हेतु प्रश्न–पत्र के प्रारूप का नमूना	38
V.	पाठ्य–पुस्तक में निहित मूल्य	49
VI.	कक्षा में हिन्दी की भूमिका	51
VII.	मार्गदर्शन की नवीन पद्धति	53
VIII.	कक्षा में पाठ्यपुस्तक का महत्व	54
IX.	कक्षा में मार्गदर्शक और शिक्षार्थी की सहभागिता	56
X.	हिन्दी–मार्गदर्शन के उद्देश्य	57
XI.	क्रिया–योजना का संक्षिप्त परिचय	59
XII.	संसाधकों की समय–तालिका	60

रचना

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम का ढाँचा – 2005 (N.C.F.)

सन् 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा शिक्षा की उत्तम व्यवस्था का प्रयास आरंभ हो चुका था। इस शिक्षा व्यवस्था की बुनियादी तौर पर समय-समय पर पाठ्यक्रम की नीति में सुधार किया जा रहा है। इन सभी पाठ्यक्रमों में मूलरूप से संविधान के अनुसार बनाए गए मूल्य ही प्रधान हैं। यहाँ सामाजिक न्याय तथा समानता के आधार पर समतावाद, धर्मनिरपेक्ष, बहुजन समाज की स्थापना की गई हैं। इन सभी अंशों को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम-ढाँचा (N.C.F.) 2005 के मूल आशय के रूप में लिया गया है।

मुख्य लक्षण :

1) भारतीय संविधान में निहित मूल्यों को आत्मसात करना।

2) पाठ्यक्रम द्वारा निश्चित बोझ को कम करना।

3) सभी को मूल्याधारित/गुणात्मक शिक्षा उपलब्ध कराना।

4) व्यवस्था में सुधार लाना।

5) सर्व समान विद्यालय की व्यवस्था।

जिनके आधार पर शिक्षा के उद्देश्यों की रचना की गई है, वे हैं –

- ❖ स्वतंत्र चिंतन तथा क्रियाशीलता का विकास।
- ❖ अन्य लोगों की भावना का सम्मान करना, सामंजस्य स्थापित करना
- ❖ नयी परिस्थिति के लिए नई और सृजनात्मक रीति से तालमेल करना।

पाठ्यक्रम की अभिवृद्धि में N.C.F.–2005 के पाँच मार्गदर्शक तत्व –

- ❖ विद्यालय से बाहर के जीवन से अपने ज्ञान का सम्बन्ध स्थापित करना।
- ❖ सीखने की प्रक्रिया में कंठस्थ करने के विधान से अलग करने की स्पष्टता।
- ❖ पाठ्यक्रम पाठ्यपुस्तक से ऊपर उच्चस्तर पर ले जाना।

- ❖ नवीन रीति से परीक्षाओं का आयोजन तथा कक्षा के अनुरूप समायोजन करना।
- ❖ प्रजासत्तात्मक राज्य की व्यवस्था में परस्पर श्रद्धा तथा प्रेम पूर्वक संलग्नता का विकास करना।

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम – ढाँचा–2005 का आशय –

उपरोक्त पाँच अंशों के मार्गदर्शक तत्व बोझ रहित सीखने की क्रिया को ध्यान में रखकर निर्धारित किए गए हैं। सीखना बच्चे के शारीरिक तथा मानसिक स्तर के अनुसार हो तथा सीखने एवं ज्ञान प्राप्त करने में पाठ्यक्रम सहायक हों। बच्चे के स्वभाव तथा वातावरण के अनुरूप सीखने के परिणाम हों।

ज्ञान तथा सूचनाओं को अलग रखें। ज्ञान अथवा प्रेरणा प्रदान करना वृत्ति संबंधी क्रिया कलाप के रूप में हो न कि सूचनाएँ देना, स्मरण शक्ति बढ़ाने के प्रशिक्षण के रूप में। कक्षा में सीखने की क्रियाएँ अनुभव आधारित हों, बच्चा अपने ज्ञान को प्राप्त करने में सहायक हों। पाठ्यविषयों के अंतर को कम करने की सिफ़ारिश की गई है, कहा गया है कि सम्मिलित पाठ्यवस्तु हो। पाठ्यवस्तु तथा अन्य साहित्य बच्चे के घर तथा समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक हों। बच्चे की मातृभाषा, स्थानीय भाषा, आदिवासी अन्य भाषाएँ प्रारंभिक स्तर पर ही सीखने (अधिगम) के माध्यम के रूप में प्रयोग की जाएँ। द्वितीय तथा तृतीय भाषा के सभी कौशल प्रदान करने हेतु प्रशिक्षण देना चाहिए।

परीक्षा संबंधी परिवर्तन के तौर पर बोझ रहित तथा दबाव तनाव कम करने का प्रयास होना चाहिए। परीक्षा में पूछे गए प्रश्नों का स्वरूप तार्किक तथा सृजनात्मक क्षमता को बढ़ाने वाला हो। कक्षा के साथ–साथ ही परीक्षाएँ तथा मूल्यांकन शामिल हों। उत्तीर्ण–अनुत्तीर्ण पद्धति से हटकर अलग प्रकार से 'उपलब्धि' के रूप में बच्चों की पहचान बनाएँ। विद्यालय तथा अन्य सामाजिक अंग के बीच सहभागिता हो तथा प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमिकीकरण हो।

इन सभी आशयों तथा मार्गदर्शन के तत्वों को ध्यान में रखकर नई पुस्तक की रचना की गई है।

R.T.E.–2009 सीखना तथा सिखाना –
(शिक्षण के मूल अधिकार)

'गुणात्मक शिक्षा' प्रत्येक बच्चे का मूलभूत अधिकार है। इस अधिकार के लिए निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा प्राप्ति को ''बालक बालिका अधिकार अधिनियम–2009'' को जारी किया गया है।

- विभाग–9 (एफ) के अनुरूप कक्षा, शौचालय, पानी की सुविधा, खेल का मैदान, श्यामपट, सहायक सामग्री आदि सुविधाओं की व्यवस्था अनिवार्य है। ये सब बच्चे के विद्यालय जीवन में आत्मीयता प्रदान करने वाले अंश हैं।

- विभाग 19 के अनुरूप प्रत्येक राज्य अपनी शिक्षा की गुणात्मकता के लिए मानदण्ड निर्धारित कर उसके अनुरूप कार्य करता है।

- चतुर्थ अनुसूची के अंशों में प्रत्येक मार्गदर्शक कक्षा से पूर्व तैयारी के साथ एक सप्ताह में 45 घंटे कार्य करने की बात कही है।

- छठी से आठवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए 1000 शिक्षा अवधि (घंटों) का निर्धारण किया गया है।

- विभाग 21 तथा 22 के अनुरूप विद्यालय व्यवस्था समिति विद्यालय की शिक्षा संबंधी गुणात्मकता को देखकर यदि आवश्यकता हो तो निम्नलिखित अंशों द्वारा विकास की दिशा में प्रयास करें–
  - विकेन्द्रीकृत, परिस्थिति के अनुरूप, कक्षानुरूप, योजनाएँ बनाना, लागू करना, अनुपालन तथा मूल्यांकन।
  - सीखने से संबंधित उपकरणों, सामग्रियों की आपूर्ति।
  - बाह्य निरीक्षण को सशक्त बनाएं।
  - विद्यालय के भौतिक तथा कक्षा की प्रक्रिया को दृढ़ बनाएँ।

- विभाग 29 और 30 के अनुरूप बच्चे के सर्वांगीण विकास को दाखिल करने के लिए निरंतर तथा व्यापक मूल्यांकन किया जाए तथा प्रमाण–पत्र दिए जाएँ। किन्तु बच्चा किसी भी परीक्षा मंडली के अंतर्गत परीक्षा नहीं देगा।

- ❖ विभाग 31 के अनुरूप बच्चे के अधिकार को लागू करने के लिए विद्यालय तथा सहकर्मी क्रियाशील हों।

इसके अतिरिक्त पाँचवें अध्याय के 29 वें विधान के अनुसार सीखना-सिखाना, पाठ्य विषयों का निर्वहण - इसके लिए निश्चित आधार एवं नियम हैं।

N.C.F.-2005 तथा R.T.E.-09 के आशयों की पूर्ति के लिए राज्य में जारी कार्यक्रम -

- ❖ सीखने की प्रक्रिया में सीखने वाले (शिक्षार्थी) की आवश्यकता, सामर्थ्य तथा सीमा के आधार पर पाठ्यक्रम हों।
- ❖ परिष्कृत पाठ्यक्रम उन्नत शिक्षा पाने वाले शिक्षार्थियों की आवश्यकता मात्र ही नहीं, सभी शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनाए जाएं।
- ❖ शिक्षार्थी 8वीं कक्षा से ही अपने अस्तित्व की पहचान (उद्योग के अवसर) के योग्य नवीन मार्गों को चुन सके, ऐसा पाठ्यक्रम हो।
- ❖ औपचारिक शिक्षा में कई कारणों से निर्दिष्ट स्तर तक शिक्षार्थी नहीं पहुँच पाता तो उनके लिए भी 'मुक्त विद्यालय' के पाठ्यक्रम का अवसर प्रदान करें।
- ❖ पाठ्यक्रम पाठ्यवस्तु तथा पाठ्य पुस्तकों को राज्य शिक्षा नीति के अनुरूप त्रिभाषा सूत्र को अपनाएं।

मूल्यांकन (Evaluation)

शिक्षा-जगत् में मूल्यांकन ने नया-नया प्रवेश किया है। यह प्रवेश मापन की अनेक गम्भीर कमियों को दूर करने के लिए किया गया है। मापन वास्तव में आयामों को प्रतीक ही प्रदान करता है जबकि ये प्रतीक एकाकी रूप से छात्र के सम्बन्ध में कुछ बतला नहीं सकते हैं। उदाहरण के लिए, किसी छात्र ने भूगोल में 45 अंक प्राप्त किये तो इससे छात्र के भूगोल के ज्ञान के सम्बन्ध में कुछ पता नहीं चलता। प्राप्त 45 अंक न्यूनतम हैं या उच्चतम हैं, कितने अंकों में से प्राप्त हैं, 45 से अधिक कितने लड़कों ने अं प्राप्त किये हैं, कक्षा के भूगोल निष्पत्ति के मानक (Norms) क्या हैं आदि बातों का जब तक ज्ञान नहीं होता, बालक की भूगोल निष्पत्ति के सम्बन्ध में 45 अंक कुछ नहीं बतलति हैं। किन्तु मूल्यांकन के अन्तर्गत इन सभी बातों पर स्पष्ट प्रकाश डाला जाता है। मूल्यांकन तथ्यों का इस प्रकार से प्रतीक प्रदान करता है कि उनसे तथ्य के मूल्यों का भी अंकन हो जाता है।

"Evaluation is the assignment of symbols to phenomena in order to characterise the worth or value of a phenomenon usually with reference to some social, cultural or scientific standard.

मापन एवं मूल्यांकन में जो अन्तर है, उसे नीचे स्पष्ट किया गया है :-

	मूल्यांकन	मापन
1.	मूल्यांकन का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। यह छात्र के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के सम्बन्ध में मूल्य का अंकन करता है।	मापन का क्षेत्र सीमित होता है। मापन व्यवहार के कुछेक आयामों को ही प्रतीक प्रदान करता है।
2.	मूल्यांकन के द्वारा छात्र की स्थिति का वर्णन इस प्रकार से किया जाता है कि उससे तुलनात्मक अध्ययन सम्भव होता है।	मापन के द्वारा तुलनात्मक अध्ययन सम्भव नहीं है।
3.	मूल्यांकन के लिए अधिकतम शक्ति साधन तथा धन की आवश्यकता पड़ती है।	मापन के लिए अधिक समय श्रम आदि की आवश्यकता नहीं होती है।
4.	मूल्यांकन के अंक प्रदान करने के बाद मूल्यों का निर्धारण किया जाता है जैसे 45 अंक प्राप्त करने वाले छात्र की कक्षा में क्या स्थिति है। मूल्यांकन बताता है कि 45 अंक प्राप्त करने वाला छात्र कक्षा में प्रथम है या द्वितीय है या कुछ और।	मापन का कार्य केवल अंक प्रदान करना ही है, इससे आगे कुछ नहीं। यह केवल इतना बतायेगा कि छात्र ने भूगोल में 45 अङ्क प्राप्त किये।
5.	मूल्यांकन के आधार पर छात्र के सम्बन्ध में स्पष्ट धारणा बनायी जा सकती है कि छात्र समग्र रूप से कैसा है।	मापन के आधार पर छात्र के सम्बन्ध में स्पष्ट धारणा का निर्माण नहीं किया जा सकता है।
6.	मूल्यांकन परिणामों के आधार पर छात्र के सम्बन्ध में पूर्ण सार्थकता के साथ भविष्यवाणी की जा सकती है।	मापन के द्वारा सार्थक भविष्यवाणी सम्भव नहीं है।
7.	मूल्यांकन में गुणात्मक तथा परिमाणात्मक दोनों ही प्रकार के निर्णय किये जाते हैं। यह संख्यात्मक तथा वर्णनात्मक दोनों ही प्रकार का होता है।	मापन में केवल परिमाणात्मक निर्णय ही किये जाते हैं। यह केवल संख्यात्मक होता है।

मापन एक स्थिति का ज्ञान देता है किन्तु सम्पूर्ण वातावरण से पृथक् रहता है, जबकि मूल्यांकन सम्पूर्ण वातावरण के सन्दर्भ में स्थिति का ज्ञान कराता है। मापन में विषय–वस्तु के एक ही पहलू पर ध्यान दिया जाता है।[1] 'ब्रेडफील्ड तथा मारडक' ने मापन और मूल्यांकन में अन्तर बताते हुए लिखा है कि मापन में किसी घटना या तथ्य के लिए प्रतीक (Symbols) निर्धारित किये जाते हैं, जबकि मूल्यांकन में घटना या तथ्य का मूल्य ज्ञात किया जाता है।[2] संक्षेप में मापन द्वारा परिमाणात्मक निर्णय लिए जाते हैं, जबकि मूल्यांकन में गुणात्मक निर्णय लिये जाते हैं।

मान्यताएँ (Assumptions)

समरफील्ड (Roy E. Summerfield) ने मूल्यांकन में निहित निम्नांकित पाठ मान्यताओं का उल्लेख किया है :–

(i) शिक्षा का कार्य व्यक्तियों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन करना है। शिक्षा द्वारा छात्र नये विचार, कौशल तथा अभिरुचियाँ प्राप्त करते हैं।

(ii) वांछित परिवर्तन ही शैक्षिक उद्देश्यों का रूप ग्रहण करते हैं। अतः वांछित परिवर्तन या शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण छात्रों के स्तर, आवश्यकता या तत्कालीन समाज की माँग को ध्यान में रखकर करना चाहिए।

(iii) मूल्यांकन प्रक्रिया द्वारा वह सीमा ज्ञात की जाती है जिस तक शैक्षिक उद्देश्य प्राप्त किये गये हैं।

(iv) मानव व्यवहार अत्यन्त जटिल है अतः इसका मूल्यांकन किसी एक ही तथ्य, संख्या या प्रदत्त द्वारा सम्भव तहीं है। इसके लिए व्यक्तित्व के विभिन्न आयाम (Dimension) का माप आवश्यक है।

(v) व्यक्ति जिस विधि से अपने विचारों को संगठित तथा परस्पर सम्बन्धित करते हैं, उस विधि का ज्ञान भी आवश्यक है।

(vi) मूल्यांकन केवल कागज, कलम तथा परीक्षण तक ही सीमित नहीं है। इसके लिए वे सभी तरीके अपनाने पड़ते हैं जिनसे यह पता लग सके कि वांछित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु छात्र क्या प्रगति कर रहा है या की है।

---

1. "Evaluation is a relatively new technical term introduced to designate a more comprehensive concept or measurement than is applied in conventional tests and examinations.... The emphasis in measurement is upon single aspects of subject-matter achievement or specific skills and abilities but.... the emphasis in evaluation is upon broad personality changes and major objectives of an educational programme. These include attitudes, interests, ideals, ways of thinking, work-habits and personal and social adaptability." - **Wrightstone**; 'Evaluations' *Encyclopaedia of Educational Research*, Macmillan & Co. N.Y. p.403.
2. Roy E. Summerfield : *The High School Journal* Vol. 48, No. 7, April 1965, pp.434-38

(vii) मूल्यांकन तथा मापन विधि छात्र के सीखने को प्रभावित करती है।

(viii)मूल्यांकन का दायित्व विद्यालय–व्यक्ति तथा अभिभावक दोनों पर ही है।

मूल्यांकन का क्षेत्र (Scope of Evaluation)

मूल्यांकन के क्षेत्र से हमारा तात्पर्य उन क्षेत्रों से है जिनमें व्यवहारगत परिवर्तन हो सकते हैं। दूसरे शब्दों में, जिसका मूल्यांकन किया जाय–प्रश्न का उत्तर ही मूल्यांकन का क्षेत्र निर्धारित करता है। मूल्यांकन द्वारा हम व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों (Dimensions) का पता लगाते हैं। ये आयाम शरीरिक, बौद्धिक **संवेगात्मक, सामाजिक तथा नैतिक क्षेत्रों से सम्बन्धित हो सकते हैं।** व्यक्तित्व के आयाम परस्पर इतने अधिक सम्बन्धित होते हैं कि उनका पृथक्–पृथक् मूल्यांकन असम्भव है, किन्तु फिर भी सुविधा हेतु उन्हें नीचे लिखे छः पहलुओं के माप से ज्ञात कर सकते हैं :–

1. ज्ञान 2. बोध 3. प्रयोग
4. विश्लेषण 5. संश्लेषण 6. मूल्यांकन

संक्षेप में मूल्यांकन का क्षेत्र ज्ञान (Knowledge), बोध (Comprehension), प्रयोग (Application), विश्लेषण (Analysis), संश्लेषण (Synthesis) तथा मूल्यांकन (Evaluation) के क्षेत्रों में व्याप्त है।

मूल्यांकन की प्रविधियाँ तथा उपकरण (Techniques and Tools)

मूल्यांकन का कार्य व्यक्तित्व के अनेक आयामों को ज्ञात करना है। अतः इसके लिए वे सभी विधियाँ तथा उपकरण काम में आते हैं जिनसे हम इन आयामों का अध्ययन कर सकें। इन प्रविधियों तथा उपकरणों में निम्नांकित उल्लेखनीय हैं :

1. **अप्रमापीकृत प्रविधियाँ तथा उपकरण** (No Standardised Techniques and Tools)-

A. संचयी आलेख पत्र

B. समाजमिति

C. प्रगति प्रतिवेदन

D. आकस्मिक निरीक्षण अभिलेख (Anecdotal Record)

E. आत्मकथा (Autobiography)

F. निर्धारण मान (Rating Scale)

G. व्यक्ति अध्ययन (Case-Study)

H. प्रश्नावाली (Questionnaire)

I. साक्षात्कार (Interview)

J. प्रक्षेपण प्रविधियाँ (Projective Techniques)

2. **प्रमापीकृत प्रविधियाँ व उपकरण** (Standardised Techniques and Tools)-

A. बुद्धि–परीक्षाएँ (Intelligence Test)

B. निष्पत्ति परीक्षाएँ (Achievement Test)

C. अभियोग्यता परीक्षाएँ (Aptitude Test)

D. रुचि परीक्षायें (Interest Inventories)

E. व्यक्तित्व परीक्षायें (Personality Test)

इन सभी प्रमापीकृत तथा अप्रमापीकृत प्रविधियों तथा उपकरणों का सविस्तार वर्णन आगामी अध्यायों में किया गया है।

मूल्यांकन में सोपान (Steps in Evaluation)

मूल्यांकन कार्य हेतु निम्नांकित सोपानों (Steps) की आवश्यकता पड़ती हैं :–

(i) शैक्षिक उद्देश्यों का चयन।

(ii) शैक्षिक उद्देश्यों का विशिष्टीकरण (Specification)।

(iii) स्थिति का ज्ञान (Identification of the Situation)।

स्थिति–ज्ञान से तात्पर्य उस स्थिति से है जिसमें छात्रों द्वारा निश्चित व्यवहार करता है और फिर उसका माप करना है। मूल्यांकन कार्य हेतु इस प्रकार की स्थिति का निर्माण करना पड़ता है। उदाहरणार्थ, यदि हम छात्रों की पढ़ने की गति का माप करना चाहते हैं तो हमें ऐसी स्थिति का निर्माण करना पड़ेगा जिसमें छात्र पढ़ने की गति सम्बन्धी कार्य करें और उस कार्य का माप हो सके।

(iv) परीक्षण–चयन (Selection of techniques and tools)

(v) परीक्षण तथा प्राविधियों का निर्माण।

यह निश्चित हो जाने पर अध्यापक किन-किन प्राविधियों तथा उपकरणों से काम लेना, उनका निर्माण करना पड़ता है।

(vi) प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण करना।

(vii) निष्कर्ष निकालना और यह देखना कि छात्र ने पूर्व-निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति में किस सीमा तक प्रगति की है, अर्थात् उसके व्यवहार में कितने परिवर्तन हुए हैं।

मूल्यांकन के कार्य (Functions of Evaluation)

वर्तमान समय में शिक्षा तथा मनोविज्ञान में मापन अग्रांकित कार्यों तथा उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रयोग किया जाता है।

(1) पूर्न-कथन तथा भविष्यवाणी (Prediction) - मापन तथा मूल्यांकन के फलस्वरूप किसी भी बालक के सम्बन्ध में स्पष्ट धारणायें निर्मित की जा सकती हैं। धारणाओं के आधार पर बालक के सम्बन्ध में स्पष्ट तथा सार्थक रूप से पूर्व कथन किया जा सकता है। पूर्व कथन से हमारा तात्पर्य वर्तमान के आधार पर भविष्य के लिए निर्णय तथा घटनाओं की घोषणा करने से है। पूर्व कथन के द्वारा बालक के भावी विकास का भी पता लगाया जा सकता है। मापन के परिणामों के आधार पर ही कहा जा सकता है कि बालक किसी विषय-विशेष या व्यवसाय में आगे चलकर किस प्रकार की उन्नति करेगा। किसी छात्र ने कक्षा में इतिहास में निष्पत्ति परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है तो कहा जा सकता है कि बालक भविष्य में इतिहास में अन्य बातें समान रहने पर अच्छी प्रगति करेगा किन्तु यह देखा गया है कि बालक ने संगीत रुचि परीक्षण में अत्यन्त ही खराब अंक प्राप्त किये है तो कहा जा सकता है कि बालक भविष्य में संगीत में विशेष उन्नति नहीं कर पायेगा।

(2) परामर्श तथा निर्देशन (Guidance) -मापन तथा मूल्यांलन के द्वारा छात्र को परामर्श तथा निर्देशन भी प्रदान किया जाता है। छात्र के विभिन्न आयामों का माप करके यह निश्चित किया जा सकता है कि छात्र को कौन-कौन से विषयों का अध्ययन करना चाहिए, उसे किस प्रकार का पाठ्यक्रम लेना चाहिए। मापन के द्वारा न केवल शैक्षिक निर्देशन ही वरन् व्यावसायिक निर्देशन देने का भी कार्य किया जा सकता है। छात्र की अनेक प्रकार की रुचियों, अभियोग्यताओं तथा रुझानों का अध्ययन करके, बालक को उसकी बुद्धि तथा शारीरिक क्षमता के अनुकूल व्यवसाय चुनने को कहा जा सकता है।

(3) तुलना (Comparison) - मापन तथा परिणामों के आधार पर दो या अधिक बालकों के मध्य तुलना भी की जा सकती है। प्राप्त परिणामों के आधार पर ही हम व्यक्तिगत विभिन्नताओं का पता

लगाते हैं प्रायः सभी प्रमापीकृत परीक्षणों के प्रमाप (Norm) होते हैं। छात्रों के प्राप्तांकों की परीक्षणों के प्रमापों के आधार पर तुलना की जाती है। प्रमापों के सन्दर्भ से ही बालकों को औसत, औसत से निम्न तथा औसत से अच्छा घोषित किया जाता है। यदि किसी परीक्षण का प्रमाप 90 है तो जो छात्र 90 से नीचे अंक प्राप्त करेंगे, औसत से निम्न तथा 90 के अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र औसत से अच्छे होंगे।

(4) संशोधन (Modification) – मापन न केवल किसी छात्र के विभिन्न आयामों की वस्तुस्थिति का ही बोध कराता है वरन् छात्र की कमजोरियों तथा दुर्बलताओं का ज्ञान भी देता है। इसके ज्ञान के आधार पर अध्यापक अनेक संशोधन कार्य भी कर सकता है। परीक्षा–परिणामों के आधार पर ही अपनी शिक्षण–पद्धति तथा पाठ्यक्रम में संशोधन किया जा सकता है। अध्यापक छात्रों के अनुकूल शिक्षण–पद्धतियाँ अपना सकता है तथा विषय–सामग्री में आवश्यक परिवर्तन कर उसे उपयोगी बना सकता है। समाजिक परिवर्तनों के अनुसार भी पाठ्यक्रम में परिवर्तन करने पड़ते हैं। मापन कार्य को भी पूरा करता है।

(5) निदान (Diagnosis) – जिस प्रकार शरीरिक दोषों को दूर करने के लिए दोषों का निदान करने की आवश्यकता पड़ती है, ठीक उसी प्रकार शिक्षा तथा मनोविज्ञान के क्षेत्रों में भी बालक की कमजोरियों, दुर्बलताओं तथा समस्यात्मक एवं असमायोजित व्यवहार का निराकरण करने से पूर्व निदान करना अत्यन्त आवश्यक है। मापन के अनेक उपकरणों द्वारा निदान कार्य किया जा सकता है। निदान–परीक्षाओं की सहायता से छात्र की अनेक प्रकार की कमजोरियों, कठिनाइयों तथा समस्याओं का ज्ञान किया जा सकता है और इस ज्ञान के आधार पर बालकों के मानसिक रोगों का निराकरण किया जा सकता है। निदान परीक्षायें बालक के उपचार में अत्यन्त सहायक होती हैं।

(6) वर्गीकरण (Classification) – मापन–परिणामों के आधार पर छात्रों का विभिन्न वर्गों में वर्गीकरण किया जाता है। विद्यालय में छात्रों का श्रेणी–विभाजन कार्य–मापन की सहायता से ही बड़ा सरल हो जाता है। इतना ही नहीं मापन की सहायता से ही बालकों का उन्नयन (Promotion) किया जाता है। कौन छात्र आगे की कक्षा में जाने योग्य है, और कौन छात्र इसके लिए योग्य नहीं, इसका ज्ञान हमें मापन ही देता है। मापन के द्वारा चुनाव कार्य भी बड़ी सरलता तथा सफलता से किया जा सकता है। विभिन्न पाठ्यक्रमों, व्यवसायों तथा कार्यों के लिए उपयुक्त छात्रों का चुनाव किया जाता है। सेना, औद्योगिक संस्थानों, नौकरियों आदि के लिए चुनाव (Selection) करते समय मापन की सहायता ली जाती है।

(7) अनुसन्धान तथा शोध–कार्य (Research Work) – अनेक प्रकार के शोध तथा अनुसन्धान कार्यों में मापन–उपकरणों का व्यापक रूप से प्रयोग होता है। शिक्षा तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में तथा

शोध अनुसन्धान से सम्बन्धित अनेक कार्य होते रहते हैं, ये कार्य बिना मापन के पूरे नहीं किये जा सकते हैं। इन शोध कार्यों के परिणामों पर ही शिक्षा तथा मनोविज्ञान को व्यावहारिक तथा प्रयोगात्मक रूप प्रदान किया जाता है। इस प्रकार मापन के द्वारा शिक्षा तथा मनोविज्ञान को व्यावहारिक रूप प्रदान किया जाता है।

मूल्यांकन के लाभ (Advantages of Evaluation)

शिक्षा तथा मनोविज्ञान में मापन अत्यन्त ही आवश्यक है। मापन के अभाव में ये दोनों विषय ही अपंगु हो जायेंगे। शिक्षा तथा मनोविज्ञान दोनों ही सामाजिक विषय हैं। फलतः इसमें सिद्धान्तों का बाहुल्य होना निश्चय ही है। मापन की समाता से इन सिद्धान्तों में अधिक से अधिक व्यावहारिकता पायी जाती है। इसके अतिरिक्त शिक्षा तथा मनोविज्ञान को मापन से अग्रांकित लाभ हैं :-

(1) बालक को समझने में सहायता - मापन बालकों को समझने में सहायता देता है। मापन के ज्ञान तथा प्रयोग से बालक की अनेक शारीरिक तथा मानसिक क्षमताओं तथा शक्तियों और सीमाओं का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। प्रत्येक अध्यापक तथा मनोवैज्ञानिक को यह कार्य करना आवश्यक है। जब तक वह बालक को ठीक से समझेगा नहीं, वह बालक को न तो उचित शिक्षा ही दे सकता है और न उसकी अनेक समस्याओं का ही समाधान कर सकता है। अतः पहले बालक को समझना पड़ता है और फिर उसके उपरान्त उसकी सहायता करनी पड़ती है। इस कार्य में मापन बड़ी सहायता करता है। अध्यापक अनेक प्रकार के मापन उपकरणों की सहायता से छात्र के सम्बन्ध में अधिक से अधिक सूचनायें प्राप्त करता है।

(2) शिक्षण-विधि में सुधार - शिक्षक एक सोद्देश्य प्रक्रिया है। प्रत्येक शिक्षण का कुछ न कुछ उद्देश्य अवश्य होता है। शिक्षण के द्वारा उद्देश्यों की किसी सीमा तक प्राप्ति हुई है, इस पर भी शिक्षण की सफलता निर्भर करती है। अगर आवश्यक तथा वांछित मात्रा में उद्देश्य प्राप्त नहीं हो पाये हैं तो शिक्षण विधि में सुधार करने की आवश्यकता पड़ती है। मापन के द्वारा यह ज्ञात किया जाता है कि शिक्षण के पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की कहाँ तक प्राप्ति हुई है। उद्देश्य प्राप्ति की सीमा के द्वारा ही शिक्षण विधि में सुधार करने की आवश्यकता अनुभव होती है। मापन के अभाव में न तो यही पता चल सकता है कि उद्देश्य कहाँ तक प्राप्त हुए हैं और न शिक्षण-विधियों में ही सुधार की आवश्यकता अनुभव होती है।

(3) पाठ्यक्रम में संशोधन - जिस प्रकार मापन-परिमाणों के आधार पर शिक्षण-विधि में सुधार किया जाता है। पाठ्यक्रम का भी मुख्य काम शिक्षा के पूर्व निर्धारित विभिन्न उद्देश्यों को प्राप्त करना है। मापन के द्वारा यह ज्ञात किया जाता है कि पाठ्यक्रम इन उद्देश्यों को प्राप्त कराने में कहाँ तक

सफल रहा है और वर्तमान पाठ्यक्रम में व्याप्त कमियों को किस प्रकार दूर किया जा सकता है। मापन के द्वारा न केवल पाठ्य-पुस्तकों का ही वरन् सम्पूर्ण विद्यालय के प्रशासन का मूल्यांकन किया जा सकता है।

(4) विद्यालय-प्रशासन में सुधार - विद्यालय-प्रशासन का भी मुख्य ध्येय शिक्षा के पूर्व निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करना है। प्रशासन इस दिशा में कहाँ तक सफल हो रहा है, मापन के द्वारा यह भी ज्ञात किया जा सकता है। विद्यालय में अनुशासन हीनता, गिरे हुये परीक्षा परिणाम, अध्यापक-वर्ग में भग्नाशा (Frustration), तथा नवीन योजनाओं के प्रति शिक्षक, छात्र तथा अभिभावक-वर्ग की क्रिया-प्रतिक्रियाओं का ज्ञान हम मापन के अनेक उपकरणों से कर सकते हैं और फिर उनका निराकरण करने हेतु आवश्यक कदम उठा सकते हैं।

(5) व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ज्ञान - प्रत्येक बालक शारीरिक तथा मानसिक रूप में एक-दूसरे से पृथक् होता है। मापन के द्वारा व्यक्तिगत पृथकताओं का ज्ञान किया जा सकता है। व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ज्ञान प्रत्येक अध्यापक तथा मनोवैज्ञानिक के लिए अत्यन्त आवश्यक होता है क्योंकि इसी ज्ञान के आधार पर विभिन्नीकृत तथा व्यक्तिगत शिक्षण तथा निर्देशन सम्भव है।

(6) कक्षा तथा वर्ग निर्माण में सहायक - मापन परिणामों के आधार पर ही यह निर्धारण किया जा सकता है कि कौन-कौन छात्र आगामी कक्षा में जाने योग्य हैं तथा किन-किन छात्रों को अभी वर्तमान कक्षा में ही रोकने की आवश्यकता है। एक स्तर की पक्षा को कभी-कभी कई वर्गों में बाँटने की आवश्यकता होती है। मापन ही पुनः विद्यालय अधिकारियों को इस कार्य में सहायता देता है।

आधुनिक मापन विधियों के दोष

वर्तमान युग में शिक्षा तथा मनोविज्ञान की जो प्रगति हुई है, उसका एकमात्र श्रेय मापन विधियों को दिया जा सकता है। मापन विधियों के द्वारा शिक्षा तथा मनोविज्ञान को नई दिशा मिली है। इतना होते हुए भी मापन विधियाँ पूरी तरह दोषमुक्त नहीं कही जा सकती हैं। इनमें कुछ अति गम्भीर दोष पाये जाते हैं। कुछ दोषों का नीचे उल्लेख किया गया है :-

(1) मापन उपकरणों के निर्माण में काफी समय, श्रम तथा धन लगता है। साथ ही साथ मानव के सभी व्यवहारों के माप हेतु उपकरण बनाना सम्भव भी नहीं है, इसलिए आज भी अनेक क्षेत्रों में अन्तर्दर्शन जैसी विषयगत विधियों से ही काम चलाया जा रहा है।

(2) मापन की आधुनिक विधियाँ योग्यता के आधार पर बालकों को श्रेणी-बद्ध करती हैं। इससे कुछ बालकों में हीनता की भावना का विकास होना भी सम्भव रहता है।

(3) मापन की आधुनिक विधियाँ बड़ी ही विशिष्ट तथा जटिल होती हैं इनका हरेक कोई प्रयोग नहीं कर सकता है। यहाँ तक कि इनके परिणामों की विवेचना भी पूर्ण प्रशिक्षित व्यक्ति ही कर सकते हैं। अतः कभी-कभी अनाड़ी या अपूर्ण प्रशिक्षित व्यक्ति के हाथों में पहुँचकर मापन-उपकरण या परिणाम उपयोगी के स्थान पर अनुपयोगी साबित होते हैं और हित के स्थान पर हानि पहुँचाते हैं। वोमर (Womer) के शब्दों में, "The consumers of test scores must be thorougly conversant with propoer methods of test use must studiously avoid misuses, overuses and misconceptions."

(4) समाज परिवर्तनशील है। इसमें नित्य अनेक परिवर्तन होते रहते हैं, इन परिवर्तनों के साथ ही मापन उपकरणों में परिवर्तन नहीं किया जाता है और यह देखा गया है कि एक बार जो उपकरण तैयार कर लिया जाता है, वह बड़े लम्बे समय तक प्रयोग किया जाता है। और इस प्रयोग में समाजिक परिवर्तनों की पूरी तरह अवहेलना की जाती है।

अतः यह आवश्यक है कि मापन उपकरणों को सामाजिक परिवर्तनों के साथ ही साथ बदलते रहना चाहिए और इनका प्रयोग एवं विवेचन उपयुक्त व्यक्तियों के द्वारा ही करना चाहिए।

निरंतर तथा व्यापक मूल्यांकन (C.C.E.)

मूल्यांकन क्या है?–

किसी भी पदार्थ या वस्तु की उपयोगीता कितनी है? इसके मूल्य की परख को ही मूल्यांकन कहते हैं। इसमें मूल्य+अंकन– दो शब्दों का मेल हुआ है। मूल्य को आँकना (जाँचना) ही मूल्यांकन है। अर्थात् विद्यालय में मार्गदर्शक तथा शिक्षार्थी दोनों के लिए इसका बड़ा महत्व है। मूल्यांकन द्वारा मार्गदर्शक अपने कार्य की सफलता, असफलता का पता लगाता है। तथा शिक्षार्थी की सीखने की प्रक्रिया द्वारा हुए परिवर्तन की जाँच करता है।

N.C.E.R.T. ने मूल्यांकन को ''सतत चलने वाली व्यवस्थित प्रक्रिया'' कहा है, जो देखती है कि–

- निर्धारित शिक्षा उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हो रही है।
- कक्षा में प्रदत्त सीखने के अनुभव कितने प्रभावी हो रहे हैं?
- शिक्षार्थियों में व्यवहार परिवर्तन की प्रक्रिया कितने अच्छे तरीके से पूरी हो रही है।

इस प्रकार संक्षेप में हम कह सकते हैं कि–

1. मूल्यांकन का शिक्षा–उद्देश्यों से गहरा संबंध है।
2. मूल्यांकन का संबंध शिक्षार्थियों के व्यवहार संबंधी परिवर्तन से है।
3. यह लगातार चलने वाली एक प्रक्रिया है।

C.C.E. और रचनात्मक विधान का परिचय–

- ❖ निरंतर तथा व्यापक मूल्यांकन शिक्षार्थियों के सर्वतोमुखी विकास के लिए अनुकूल होगा।
- ❖ शिक्षार्थियों में परीक्षा के प्रति स्थित भय को दूर करेगा।
- ❖ मूल्यांकन प्रक्रिया विद्यालयीय स्तर पर होगी।
- ❖ शिक्षार्थियों को अंकों के स्थान पर श्रेणी (ग्रेड) दिए जाएंगे।
- ❖ पाठ्य तथा पाठ्येतर क्रिया कलापों का भी समान स्तर पर मार्गदर्शन किया जाएगा।

- ❖ आंतरिक मूल्यांकन को प्रमुखता दी जाएगी।
- ❖ बाह्य मूल्यांकन तथा आंतरिक मूल्यांकन – दोनों का समान महत्व होगा।

C.C.E. क्या है?

C - Continious → निरंतर/सतत

C - Comprehensive → व्यापक/समग्र/विस्तृत

E - Evaluation → मूल्यांकन/मानांकन

इस प्रकार C.C.E. का तात्पर्य है – शिक्षार्थी के सीखने की प्रक्रिया का निरंतर तथा व्यापक मूल्यांकन।

निरंतर तथा व्यापक मूल्यांकन –

पाठ्य तथा पाठ्येतर क्रियाकलापों में शिक्षार्थी स्वयं को कितना अंतर्ग्रस्त (Involve) शामिल करता है, विद्यालय के वातावरण में उसका विविध क्षेत्रों में कार्य निर्वहण, भाग लेना, तथा प्रमति/सफलता किस हद तक है, उसे विविध तकनीकी द्वारा समग्र रूप से दाखिल करना, विश्लेषण करना और पुनः शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए अनुकूल प्रक्रिया द्वारा निरंतर तथा व्यापक मूल्यांकन किया जाता है।

शिक्षार्थियों के विविध पहलुओं का मूल्यांकन किया जाता है। उनकी शैक्षाणीक क्षमता, जैसे – ज्ञान के अंतर्गत विविध मूल्यों, रुचियों, अभिवृत्तियों की क्षमता का मापन किया जाता है।

निरंतर मूल्यांकन का अर्थ –

शिक्षार्थी के विद्यालय के वातावरण में निर्देशात्मक रूप से शामिल होना, विविध क्रिया कलापों तथा अन्य संदर्भों में उसके सहज व्यवहार को निरंतर ध्यान में रखकर सही दिशा में मार्गदर्शन करना ही ''निरंतर मूल्यांकन'' है। इसके अंतर्गत शिक्षार्थी के विकास और अभिवृद्धि की प्रक्रिया का गणना की जाती है। शिक्षार्थी के विकास के लिए मार्गदर्शक आवश्यक प्रक्रिया द्वारा प्रोत्साहन देंगे। यह विद्यालय सत्र के आरंभ से लगातार सत्र के अंत तक चलने वाली प्रक्रिया है।

व्यापक मूल्यांकन का अर्थ –

यह निर्दिष्ट समय, निर्दिष्ट पाठ्यक्रम तक सीमित होकर पाठ्येतर क्रियाओं को भी शामिल करता है।

शिक्षार्थी के सीखने की प्रक्रिया का मूल्यांकन किसी एक पहलू द्वारा न करके विस्तृत क्षेत्रों तथा विविध आयामों में किया जाता है।

निरंतर और व्यापक मूल्यांकन

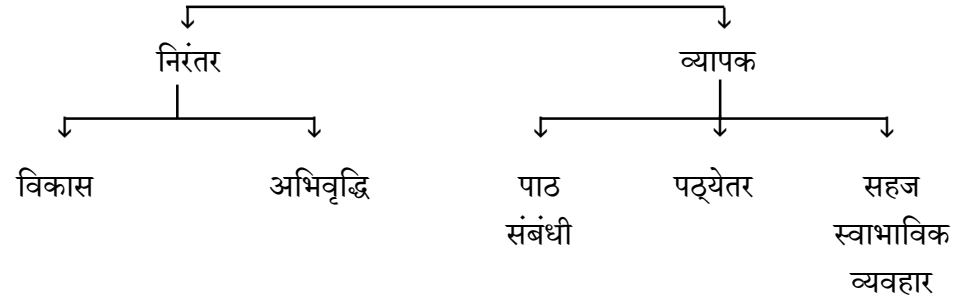

शिक्षार्थी के सहज विकास को और प्रोत्साहित करना ही मूल्यांकन है।

निरंतर मूल्यांकन द्वारा शिक्षार्थी के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक विकास को ध्यान में रखकर प्रगति की निरंतरता में विषयों को समझने में सहायता मिलती है।

इसमें शिक्षार्थी का व्यक्तित्व किस दिशा में विकसित हो रहा है या हो सकता है एवं उसके व्यवहार तथा उपयुक्त विकास को समझा जा सकता है।

निरंतर मूल्यांकन के प्रकार–

1) रचनात्मक मूल्यांकन (Formative Assessment (F.A.))

रचनात्मक मूल्यांकन पूरा सत्र चलने वाला मूल्यांकन है। औपचारिक तथा अनौपचारिक रूप से यह मूल्यांकन किया जाता है। यह नैदानिक तथा उपचारात्मक शिक्षा से संबंधित है।

कक्षा के कार्य, प्रश्नावली (क्विज) गृहकार्य, प्रदत्त कार्य, नियोजित अभिहस्तांकन, मौखिक एवं लिखित परीक्षाएँ आदि इसके अंतर्गत शामिल हैं।

F.A. (1–7 इकाई)

शिक्षार्थी का नाम		तालिका							कुल प्राप्तांक	श्रेणी
		1	2	3	4	5	6	7		
1.	मीता	-	-	4	6	7	8	8	6	B+
2.	सचिन	5	5	6	8	9	8	6	6.7	A

इकाई परीक्षा के रूप में मौखिक, लिखित, क्रियात्मक किसी भी तारीके का प्रयोग किया जा सकता है। इस परीक्षा/मूल्यांकन की कोई निश्चित संख्या नहीं होती। किंतु रचनात्मक मूल्यांकन एक (1) के लिए 10% का निर्धारण है। इसमें परिवर्तन भी हो सकता है। तात्कालिक रूप से 10% मानकर चलें तब अकलोकन इस प्रकार होगा –

मानलें : प्रत्येक इकाई के लिए 10 अंक का मूल्यांकन किया जा रहा है। सभी इकाइयों के अंकों का जोड़ तथा उनके द्वारा प्रतिशत निकालकर श्रणी का निर्धारण किया जाता है। शिक्षार्थी के ज्ञानात्मक और क्रियात्मक दोनों पक्षों का मूल्यांकन किया जाता है।

व्यापक मूल्यांकन के प्रकार
(Summative Assessment) (S.A.)

संकलनात्मक/योगात्मक मूल्यांकन

यह सत्र के प्रारंभिक सेमेस्टर SA-1 तथा सत्र के अंत में दूसरे सेमेस्टर SA-2 के रूप में होता है। यह निर्दिष्ट अवधि में (सत्र में दो बार) किया जाने वाला मूल्यांकन है। इसके अंतर्गत पूरे सत्र के क्रिया कलापों का समग्र रूप से मूल्यांकन किया जाता है। इस मूल्यांकन के लिए 30% + 30% अंक निर्धारित किए जा सकते हैं। इन्हें तीन प्रकारों से किया जा सकता है।

(i) मौखिक (ii) पुस्तक सहित (iii) पुस्तक रहित

(i) मौखिक रूप में कविता गायन, उच्चारण की स्पष्टता, लय, राग, उचित आरोह, अवरोह, पाठ को सही उतार चढ़ाव से पढ़ना, विरामादि चिह्नों को ध्यान में रखकर पढना, प्रश्नोत्तर, उपास्थान आदि द्वारा मूल्यांकन किया जा सकता है। इसके लिए 30 अंक में से 05 अंक निश्चित किया जा सकता है।

(ii) पुस्तक सहित मूल्यांकन के लिए पाठ्य पुस्तक को शिक्षार्थी देख कर, समझकर अपनी सामर्थ्य द्वारा प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़कर तथा अभिव्यक्ति द्वारा लिखते हैं। संक्षिप्तीकरण, अपठित गद्यांश से प्रश्नों के उत्तर, व्याकरण अंश, चयन आदि के रूप में 05 अंक के लिए मूल्यांकन किया जाता है।

(iii) पुस्तक रहित मूल्यांकन के लिए 20 अंक निश्चित किए जा सकते हैं। इसमें प्रश्नपत्र का लिखित रूप में मूल्यांकन होता है। इसमें श्यामपट का उपयोग, स्मृति के आधार पर प्रश्नों के उत्तर देना, लिखना, वाक्यों, कविताओं का लेखन आदि का मूल्यांकन किया जाता है।

कुल मिलाकर निरंतर और व्यापक मूल्यांकन शिक्षार्थी के सर्वतोमुखी विकास की निरंतर सुविधा प्रदान करने में सहायक है। शिक्षार्थी की गतिविधियों को विश्लेषित कर मार्गदर्शक शिक्षार्थी की शैक्षिक अभिवृद्धि का लेखा–जोखा अभिभावक को समय पर दे सकता है। इसके लिए निम्नांकित तरीके अपनाए जा सकते हैं –

- ❖ राज्य स्तर के पाठ्यक्रम पर आधारित विद्यालय स्तर पर परीक्षा कार्य किया जा सकता है। इससे पूर्व प्रश्नों की तालिका (कोष) बना लें।
- ❖ पठ्येतर विषयों के मानकों का निर्धारण कर, विविध प्रकार की सामग्री द्वारा – कक्षामापन, पूछ–ताछ सूची, संदर्भानुकूल व्यवहार संबंधी दाखिला पत्र आदि के द्वारा मूल्यांकन किया जा सकता है।

इस प्रकार कुल मिलाकर चार रचनात्मक तथा दो संकलनात्मक/योगात्मक मूल्यांकन प्रक्रिया का निर्वाह किया जाता है। सत्र के प्रारंभ से 2 रचनात्मक मूल्यांकन के बाद अर्धवार्षिक परीक्षा की अवधि में समग्र रूप से संकलनात्मक मूल्यांकन–1 किया जाता है। तत्पश्चात् ज्ञेष दो रचनात्मक मूल्यांकन और दूसरा संकलनात्मक मूल्यांकन सत्रांत में अर्थात् वार्षिक परीक्षा काल में किया जाता है।

मार्गदर्शक के लिए निरंतर एवं व्यापक मूल्यांकन की आवश्यकता –

- ❖ शिक्षार्थी के सीखने के स्तर को समझने में सहायक।
- ❖ शिक्षार्थी की प्रगति को समझने के लिए योजना बनाने तथा उसको परिष्कृत करने में मार्गदर्शन का कार्य करता है।
- ❖ अभिभावकों को शिक्षार्थी की प्रगति के बारे में सही समय पर बताने में सहायक।
- ❖ मार्गदर्शक ने शिक्षार्थी को कितना समझा है उसे जानने में सहायक।
- ❖ मार्गदर्शक ने शिक्षार्थी को उपलब्ध करायी गयी सीखने की सामग्री, सीखने की क्रियाएँ, सीखने की अवधि आदि शिक्षार्थी की आयु (अवस्था) के अनुकूल है या नहीं – इसकी जानकारी प्राप्त करने में सहायक।

शिक्षार्थी के लिए निरंतर और व्यापक मूल्यांकन की आवश्यकता –

- ❖ शिक्षार्थी को सीखने के प्रति आत्मविश्वास बढ़ाने/जागृत करने तथा अपेक्षित विकास की ओर बढ़ने में सहायक।

- ❖ शिक्षार्थी भयमुक्त, स्वच्छंद वातावरण में कार्यरत है, सीख रहे हैं, इसका पता लगाने में सहायक।
- ❖ शिक्षण व्यवस्था में लागू उचित निति–नियमों को समझ कर यह पता लगाया जा सकता है कि अन्य किन सुविधाओं द्वारा वे सीख सकते हैं।
- ❖ शिक्षार्थी के अनुकूल, अपेक्षित विद्यालय का वातावरण निर्माण कर सूम्पूर्ण विद्यालय की अभिवृद्धि का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।
- ❖ शिक्षार्थियों को गुणात्मक शिक्षा प्राप्त हो रही है, इसमें अभिवृद्धि हो रही है, इसे जाँचने का कार्य समय–समय पर किया जा सकता है।

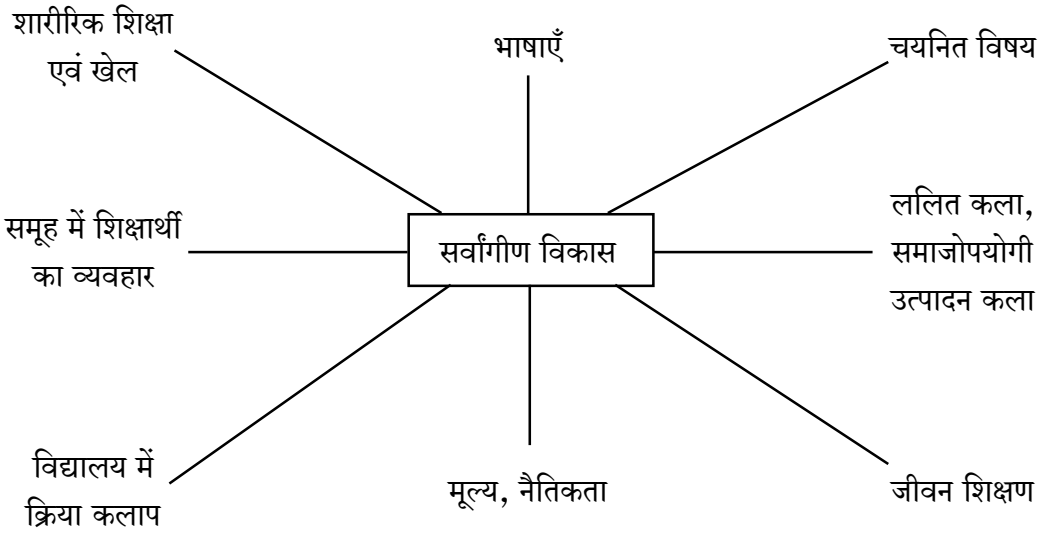

निरंतर, व्यापक मूल्यांकन के उद्देश्य –

- ❖ शिक्षार्थी की उपलब्धि का समग्र विश्लेषण हो सके।
- ❖ प्रत्येक सामर्थ्य में शिक्षार्थी की उपलब्धि का दाखिला हो सके।
- ❖ अंकों के बदले श्रेणी द्वारा शिक्षार्थी की प्रगति को प्रस्तुत/व्यक्त करना।
- ❖ सीखने के बारे में निश्चितता के लिए समयानुसार, संदर्भानुसार आवश्यक जानकारी पाने के लिए सहायता मिले।
- ❖ विविध लिखित परीक्षाओं के दबाव को कम किया जाए।

- ❖ विविध साधन–सामग्रियों द्वारा लिखित, मौखिक, निरीक्षण, संदर्शन, कक्षामापन, सांदर्भिक दाखिला इत्यादि द्वारा वैयक्तिक और सामूहिक सीखने की प्रक्रिया के विकास की जाँच विविध आयामों में करने में सहायक।
- ❖ 'परीक्षा' नामक शब्द का भय दूर करने में सहायक।
- ❖ संतोषप्रद तथा बालस्नेही तरीके अपनाकर शिक्षार्थी के सीखने के विकास को समझना।
- ❖ सहपाठ्यक्रम के क्षेत्र–समाजोपयोगी उत्पादन कला, शारीरिक शिक्षा आदि में शिक्षार्थी की सहभागिता का दाखिलकर विश्लेषित करने जैसे – कोई चित्र बनाने में रुचि रखता है तो कोई लेखन कला में, कोई खेल में आदि में सहायक।
- ❖ शिक्षार्थी के विविध क्षेत्रों में विकास तथा अभिवृद्धि संबंधी समग्र वैयक्तिक दाखिले रखने में, प्रोफाइल (पार्श्विक) बनाने सहायक।
- ❖ शिक्षार्थी की उपस्थिति, वैयक्तिक शुद्धता/स्वच्छता, क्रमबद्धता, जिम्मेदारी, प्रजासत्तात्मक भाव, पर्यावरण की रक्षा के प्रति जागरुकता, कर्तव्यपरायणता, स्वनियंत्रण, सहयोग, सहभागीता आदि मूल्यांकन परिधि के अंतर्गत जानने में सहायक
- ❖ शिक्षार्थी की प्रगति के बारे में अभिभावक तथा समुदाय के लोगों में आत्मविश्वास जगाने के बारे में जानने में सहायक।
- ❖ मूल्यांकन प्रक्रिया द्वारा धनात्मक परिणाम प्राप्त हो तथा विकास की दिशा में पूरक प्रभाव डाले, जानने में सहायक।
- ❖ शिक्षार्थी को स्वमूल्यांकन की समर्थता प्रदान करने में सहायक।

निरंतर मूल्यांकन के तत्व :

मूल्यांकन हेतु पाठ्य, सहपाठ्य तथा शिक्षार्थी के सहज व्यवहार का ध्यान में रखना आवश्यक है। इसके साथ ही अवलोकन, व्यक्ति वृत्तांत का दाखिला, संयोजक तालिका, स्तर मापन का नमूना, संदर्शन, प्रश्नावली, योजना कार्य, अभिहस्तांकन, संदर्भानुकूल दाखिला आदि की सूची से मूल्यांकन किया जा सकता है।

किसी भी शिक्षार्थी का मूल्यांकन किसी एक विधि या तकनीक के उपयोग से नहीं किया जा सकता। शिक्षार्थियों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित अंशों को ध्यान में रखना आवश्यक है–

- **सोखने के क्षेत्र का स्वरूप –** शिक्षार्थी के सीखने, और अनुभव के क्षेत्र भिन्न-भिन्न होते है, जैसे भाषा, वैकल्पिक विषय, खेल, स्वास्थ्य विविध क्षेत्रों में उनकी अलग-अलग रुचियाँ होती है।
- **सीखने की विधि –** शिक्षार्थी के सीखने का अनुभव व उसके वातावरण, पारिवारिक पृष्ठभूमि के अनुरूप तेज या धीमी गति में आगे बढ़ सकता है।
- **सीखने के उद्देश्य –** प्रत्येक क्षेत्र के सीखने के उद्देश्य अलग-अलग होकर सीखने की प्रक्रिया और साधना को स्वरूप देते है।
- **शिक्षार्थी की पृष्ठभूमि –** प्रत्येक शिक्षार्थी अलग-अलग परिवेश, परिवार, क्षेत्र से विद्यालय में आता है। और वहाँ के वातावरण में सयायोजन करता है।
- **विद्यालय का परिवेश –** प्रत्येक विद्यालय और कक्षा का परिवेश, शिक्षार्थी को प्राप्त भावनात्मक अवसर, अभिप्राय आदि के आधार पर शिक्षार्थी की प्रगति एवं विकास की दिशा में सहायक माने जाते हैं।

निरंतर तथा व्यापक मूल्यांकन और N.C.F. – 2005

1. शिक्षार्थी के सीखने की गुणात्मकता तथा विस्तृत क्षेत्र में किसी भी प्रकार की प्रगति को सूचित करने वाला पत्र हो। इसमें शिक्षार्थी की उपलब्धि, सहभागिता (अंतर्ग्रस्तता) आदि विविध आयामों का विश्लेषण हो।
2. शिक्षार्थी का ध्यान जब तक पाठ्य पुस्तक की ओर आकर्षित रहे तब तक ज्ञानवर्धन का कार्य हो। जबरदस्ती पाठ सिखाने की प्रक्रिया समय को व्यर्थ करना होगा।
3. सीखने के परिणाम के अतिरिक्त शिक्षार्थियों के अनुभवों का मूल्यांकन किया जाए। वैयक्तिक या सामूहिक अभ्यासों द्वारा उनके प्रयासों को परिणामकारी बनाने का अवसर उन्हें प्रदान करें। जैसे – कक्षा में श्यामपट कार्य, सामूहिक पदत्त कार्य, मौखिक उत्तर आदि।
4. ज्ञान आधारित विषयों में शिक्षार्थी ने क्या सीखा है? तथा इससे उनकी समस्या का समाधान प्रमुख किस प्रकार हो सकता है? सीखे गए ज्ञान का व्यावहारिक उपयोग कैसे हो। आदि का मापन ही प्रमुख उद्देश्य हो।
5. सह पाठ्यक्रम में शिक्षार्थी क्या सीखते हैं? इससे प्राप्त लाभ क्या है? उसे ध्यान में रखकर मार्गदर्शक शिक्षार्थी की सहभागिता, रुचि, स्तर, कार्यसीखने के प्रति श्रद्धा, विविध सामर्थ्यों और कौशलों का मूल्यांकन हेतु प्रयोग करें।

निरंतर तथा व्यापक मूल्यांकन और R.T.E. 2009 –

A. शिक्षार्थी की सीखने की प्रक्रिया कक्षा या विद्यालयी परिवेश में केवल बौद्धिक स्तर तथा विषय ज्ञान तक ही सीमितन रहे। उसके समग्र विकास जैसे – चारित्रिक, वैयक्तिक, सामूहिक, सामाजिक आदि को अवसर प्रदान किया जाए। इसके लिए RTE 2009 में उल्लिखित अंश इस प्रकार हैं –

- ❖ संविधान में पवित्र स्थान प्राप्त नैतिक मूल्य जैसे – सत्य–अहिंसा, सहयोग, प्रेम, शांति आदि को सीखने का अवसर दिया जाना चाहिए।
- ❖ शिक्षार्थी को सर्वांमीज विकास का पूरा अवसर प्राप्त हो।
- ❖ शिक्षार्थी में निहित ज्ञान, सामर्थ्य एवं प्रतिभा के विकास एवं पोषण को प्रोत्साहन दें।
- ❖ शारीरिक एवं मानसिक सामर्थ्यों के विकास का पूरा अवसर प्रदान करें।
- ❖ बाल स्नेही तथा बाल केन्द्रित वातावरण में क्रियाकलाप, खेल, अन्वेषण, नवीन प्रविधि द्वारा शिक्षार्थी को सीखने का उन्मुक्त वातावरण और अवसर प्रदान करें।
- ❖ शिक्षार्थी को भय, चोट तथा झिझक आदि को दूर कर मुक्त एवं स्वच्छन्द रूप से अपने अभिप्राय व्यक्त करने का अवसर दें।

विद्यालीय स्तर पर मूल्यांकन की विविध प्रविधियाँ

मूल्यांकन एवं अवलोकन के समय मार्गदर्शक को यह ध्यान में रखना चाहिए कि –

- कल्पनात्मक दाखिला न करें।
- निर्णय एकदम से न लें।
- कभी–कभी प्रश्नावली से अधिक सूचनाएँ प्राप्त हो जाएँ तो उसकी भी गणना करें।
- भिन्न परिस्थिति, परिवेश, क्रियाकलाप, स्तर तथा आयु के अनुरूप अवलोकन तथा मूल्यांकन करें।

रचनात्मक मूल्यांकन के तरीके –

1) शिक्षार्थियों द्वारा स्व–मूल्यांकन

2) शिक्षक द्वारा मूल्यांकन

3) सहपाठियों द्वारा मूल्यांकन

4) सहशिक्षकों द्वारा मूल्यांकन

इस प्रकार मूल्यांकन के समय ध्यान रखें कि शिक्षार्थी के किस सामर्थ्य, कौशल का मूल्यांकन किया जा रहा है। उसका स्पष्ट उल्लेख हो तथा उसके आधार पर मूल्यांकन के लिए जिन अंश तालिकाओं का उपयोग करे उसे स्पष्ट रूप से दाखिल करें।

जैसे – मौखिक उत्तर, लिखित उत्तर, श्यामपट लेखन, विविध क्रियाकलाप, सामूहिक क्रियाएँ, आंगीक भाषा, उच्चारण–स्पष्टता, आत्मविश्वास से सहभागीता आदि। शिक्षार्थी के किसी भी कौशल का अकेले या दो अंशो, तीन अंशो या चारों का एक साथ भी मूल्यांकन किया जा सकता है।

रचनात्मक मूल्यांकन (F.A.)

		1	2	3	4	FA1		श्रेणी
1.	रवि	8	6	7	8	29/40	7.2	A
2.	रमेश	6				27	6.7	B+

कुल अंक – श्रेणी

29/40 x 10 = 7.2

FA1 जून 1 से प्रारम्भ जुलाई में समाप्त

FA2 जुलाई अंत या अगस्त 1 से प्रारम्भ सितंबर में समाप्त

सितंबर – अक्तूबर में SA1 (संकलनात्मक मूल्यांकन)

FA3 नवंर – दिसंबर

FA4 जनवरी – फरवरी

FA2 – मार्च

मूल्यांकन के प्रकार

1. सहपाठियों द्वारा मूल्यांकन

मूल्यांकन कर्ता – लक्ष्मी
प्रत्येक (10 अंक)

क्रम सं.	शिः के नाम	1 (10) मौखिक अंश	2 (10) लिखित अंश	श्यामपट कार्य 3	विविध क्रिया–कलाप 4	सामूहिक क्रिया–कलाप 5	विद्यालय में संभवित 6	7	8	कुल (80)
1.	रोजा	✓	✓	✓	✓	–	–	✓	–	50
2.	रूपा	✓	–	✓	✓	✓	–	–	–	40
3.	राम	–	✓	✓	–	✓	✓	–	–	40
4.	रघु	–	✓	✓	✓	–	–	–	–	30
5.	रक्षा	✓	✓	✓	–	–	–	–	–	30
6.	मनोज	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	–	70
7.	रम्या	✓	✓	–	✓	✓	✓	✓	–	60

2. स्व–मूल्यांकन

शिक्षार्थी का नाम : समरीन परीक्षण सूची

	मूल्यांकन के अंश	नहीं	थोडा बहुत	हाँ	स्पष्ट रूप से	पूर्णतः	बहुत अच्छी तरह	कुल (अंशतः/ पूर्णतः)
1.	मैंने पाठ समझा।	–	–	–	–	✓	–	
2.	पाठ के मुख्य अंश जाने।	–	–	–	–	✓	–	
3.	पाठ के रुचिकर अंश चुन सकती हूँ।	–	–	–	–	–	✓	
4.	क्रिया शब्दों का चयन कर सकती हूँ।	–	–	–	–	–	✓	
5.	प्रश्नों के उत्तर मौखिक रूप से दे सकती हूँ।	–	–	–	–	–	✓	
6.	प्रश्नों के उत्तर लिखित रूप में दे सकती हूँ।	–	–	–	–	–	✓	
7.	ऐसी एक घटना सुना सकती हूँ।	–	–	–	–	✓	–	
8.	मुझे कहानी लिखना पसंद है।	–	–	–	–	✓	–	
9.	मैं इस पाठ की तुलना अन्य भाषा के पाठ से कर सकती हूँ।	–	–	–	✓	–	–	
10.	मैं अन्य भाषा से हिंदी में सारांश लिख सकती हूँ।	–	–	✓	–	–	–	

3. शिक्षक द्वारा मूल्यांकन –

कक्षा – 9

इकाई – 2

पाठ – गुलाबसिंह मूल्यांकन के अंश

शिक्षार्थियों के नाम		1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	(10) कुल
1.	रजा	✓	–	✓	✓	–	✓	–	✓	✓	–	6
2.	तेजस्विनी	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	10
3.	राघु	–	✓	✓	–	✓	✓	✓	✓	–		6
4.	विराट	✓	✓	–	✓	✓	✓	–	–	✓	✓	7
5.	कमल	✓	✓	–	✓	–	✓	✓	✓	✓	✓	8
6.	खेता	–	✓	✓	✓	–	–	✓	✓	✓	–	6
7.	समटीन	✓	✓	–	✓	✓	–	✓	✓	✓	✓	8
8.	रक्षा	✓	✓	✓	–	✓	✓	–	✓	✓	✓	8
9.	सुनील	✓	✓	–	✓	–	✓	✓	–	✓	✓	7

मूल्यांकन के अंश –

1. कविता गायन (6)
2. पाठ का उचित आरोह अवरीह से पठन (7)
3. आंगिक प्रतिक्रिया (8)
4. लेखन–प्रश्न उत्तर (9)
5. उच्चारण स्पष्टता (10)

4. सह शिक्षकों द्वारा मूल्यांकन –

सत्यापन तालिका (सूची)

	भाषा – समूह चर्चा	हाँ	ना
1.	समूह में नेतृत्व कौशल का प्रदर्शन किया गया?	–	✓
2.	समूह में दी गई भूमिका का सही निर्वाह करता है?	✓	–
3.	शिक्षार्थी को विषय का ज्ञान था?	✓	–
4.	उसका विषय प्रस्तुतीकरण सही है?	–	✓
5.	अपने सहपाठियों की इज्जत करता है?	✓	–
6.	संवहन कौशल ठीक है?	–	✓
7.	आस–पास के माहौल के प्रति संवेदनशीलता है?	✓	–
8.	भाषण के समय आंगिक किया, भाव, भाषा ठीक थी?	–	✓
9.	समयानुसार आवश्यक अंशों की जानकारी प्राप्त करता है?	✓	–
10.	अन्य शिक्षार्थियों को वाद–विवाद का काफी अवसर प्रदान करता है?	✓	–
11.	----------		
12.	----------		
13.	----------		

प्रदत्त कार्य – जाँच तालिका

1. नियोजित कार्य के बारे में ज्ञान है? – हाँ/नहीं
2. शिक्षार्थी विषय संबंधी मुख्य अंशों का संग्रह कर चुका है? – हाँ/नहीं
3. नियोजित कार्य शिक्षार्थी के सृजनात्मक सामर्थ्य को प्रतिबिंबित करता है? – हाँ/नहीं
4. ----------
5. ----------
6. ----------

मूल्यांकन हेतु चयनित कौशल

'सुनना'

अंक 0 – 1 – 2 – 3

शिक्षार्थी	(0) नहीं सुनते हैं	(1) सुनते हैं	(2) ध्यानपूर्वक सुनते हैं	(3) प्रतिक्रिया
रक्षा	✓	–	–	–
संजू	–	✓	–	–
भीमा	–	–	✓	✓
पूजा	–	–	✓	✓

अंकों के अनुरूप श्रेणी निर्धारण

9 – 10 (90–100) = A+

8 – 9 (80–90) = A

7 – 7.9 (70–80) = B+

6 – 6.9 (60–70) = B

5 – 5.9 (50–60) = C+

4 – 4.9 (40–50) = C

3.5 – 3.9 (35–39) = D

20 – 34 = E
10 – 19 = F
0 – 9 = G

} उपचारात्मक मार्गदर्शन के लिए अनिवार्य रूप से चयन होंगे।

संकलनात्मक मूल्यांकन के स्वरूप तथा प्रतिशत (योगात्मक) का प्रारूप

1. मौखिक – 05 अंक % = व्यवस्थित आयोजन हो, तार्किक चिंतन, अभिव्यक्ति, मूल्याधारित प्रश्न हो।
2. पुस्तक सहित – 05 अंक % = ग्रहण, अभिव्यक्ति, प्रशंस, संक्षेप, सारांश तथा मूल्य हो।

3. पुरत्तक रहित – 20 अंक % = ज्ञात–प्रश्नोत्तर आदि।

कुल – 30%

मौखिक → प्रशंसा – कविता, लघुप्रश्न आदि।
पुस्तक सहित → अभिव्यक्ति स्तर – निबंधात्मक।
पुस्तक रहित → ज्ञान, बोध, व्याकरण आदि।

मूल्यांकन सूची

चाहे जितनी भी सूची बनाएँ, वह मार्गदर्शक के लिए हो, या स्व–मूल्यांकन (शिक्षार्थी) के लिए या सहमार्गदर्शक के लिए, या सहपाठियों के लिए, उसकी एक तालिका अपनी शिक्षार्थी सूची के पूर्व लगाएँ। उस पर संख्या I, 1, 2, i, ii, A, B, आदि पहचान के लिए लगाएँ। अंदर शिक्षार्थी की अनुक्रमणिका में संख्यानुसार मूल्यांकन करें।

जैसे – शिक्षक द्वारा मूल्यांकन सूची–

I. अभिव्यक्ति और अभिरुचि का मूल्यांकन –

A – शिक्षार्थी कविता का सस्वर वाचन कर सकता है।

B – कविता में निहित मूल्य, मुख्य अंश चुन सकता है।

C – बताए गए अंशों को दोहरा सकता है।

D – कविता के मूल्यों को अन्य कविता से तुलना कर सकता है।

E – भावार्थ ग्रहण करता है।

	A	B	C	D	E	कुल
शिक्षार्थी –1	✓	✓	✓	✓	✓	5
शिक्षार्थी –2	–	✓	–	✓	–	2
शिक्षार्थी –3	✓	✓	–	✓	–	3
शिक्षार्थी –4	–	✓	✓	–	–	2
शिक्षार्थी –5	–	✓	–	✓	–	2
शिक्षार्थी –6	–	✓	✓	–	–	2
शिक्षार्थी –7	–	–	✓	✓	✓	3

विद्यालयों में शिक्षार्थियों की प्रगति जाँचने के लिए कुछ मुख्य क्रियाकलापों का आयोजन करना होगा।

I. पूरे समूह के लिए, वैयक्तिक रूप से।

II. उक्त लेखन (आलेखन)।

III. ध्यान देना – स्वच्छता, व्यवहार कुशलता, भाषा प्रयोग, सहयोग आदि।

IV. बातचीत – कहानी पढ़ना – कहानी कहना, कविता गाना, कविता सुनाना, कविता लिखना आदि।

V. आँकडों की जाँच।

VI. किसी कार्य का संचालन, व्यवस्था, पालन, अनुशासन आदि।

विषय शिक्षक की वैयक्तिक जाँच तालिका का होना आवश्यक है जिसमें विविध प्रकार के मूल्यांकन के सत्यापन की जाँच दर्ज की जाएगी तथा सत्रांत में अंक अथवा श्रेणी तालिका के निर्माण में सहायक होगी।

पाठ्य विषयों का मूल्यांकन

1) **निर्दिष्ट क्षेत्र –** सभी विषयों, भाषाओं के लिए।

2) **विधियाँ –** मौखिक परीक्षा, लिखित परीक्षा, नैदानिक परीक्षा, परियोजना कार्य, प्रायोगिक परीक्षा, अवलोकन पद्धति, डायरी निर्वहण।

3) **सहायक साधन –** मौखिक प्रश्न, अभ्यास प्रश्न, अभ्यास कार्य–कलाप, प्रश्न–पत्र, योजना कार्य, अवलोकन सूची।

4) **अवधि –** प्रत्येक, मासिक अवधि, इकाईवार, लघु परीक्षा, सेमेस्टर/अर्ध वार्षिक परीक्षा, वार्षिक परीक्षा।

5) **रपट (रिपोर्ट) –** प्रत्यक्ष, परोक्ष रूप से अवलोकन करके श्रेणी प्रदान करना।

   (i) प्रत्यक्ष – अध्यापक और शिक्षार्थी को ज्ञात है कि परीक्षा ली जाएगी।

   (ii) परोक्ष – केवल अध्यापक को ज्ञात है कि शिक्षार्थी परीक्षा में (जाँच कार्य के अंतर्गत) है।

संकलनात्मक मूल्यांकन हेतु प्रश्न–पत्र का प्रारूप

संकलनात्मक/योगात्मक मूल्यांकन सत्र में दो बार किया जाता है। इसके लिए 30 + 30 अंक निर्धारित हैं, जिसमें मौखिक तथा लिखित के लिए क्रमशः 10 तथा 20 अंकों का विभाजन किया गया है। पाठ्यपुस्तक को आधार बनाकर शिक्षार्थी के सीखने की प्रक्रिया का समग्र मूल्यांकन इसके अंतर्गत किया जाता है।

इस मूल्यांकन प्रक्रिया का अंक विभाजन इस प्रकार किया जा रहा है –

प्रथम सत्र (जून – सितंबर)

संकलनात्मक मूल्यांकन – 1	अंक	प्रतिशत
पढ़ना	20	20%
लिखना	20	
व्याकरण	20	
साहित्य	20	
रचनात्मक मूल्यांकन		20%
कुल		40%

द्वितीय सत्र (अक्तूबर – मार्च)

संकलनात्मक मूल्यांकन – 2	अंक	प्रतिशत
पढ़ना	20	40%
लिखना	20	
व्याकरण	20	
साहित्य	20	
रचनात्मक मूल्यांकन		20%
कुल		60%

अच्छे प्रश्नपत्र की विशेषताएँ

1) **विश्वसनीयता –** प्रत्येक शिक्षार्थी का मापन एक जैसा होगा। परिणाम स्थिर रहे। तात्पर्य यह है कि परीक्षा विश्वसनीय तब होगी जब परीक्षकों को बदलने पर भी परिणाम न बदलें। शिक्षार्थियों की उत्तर पुस्तिकाओं की कई बार जाँच होने पर भी प्राप्तांकों में कोई अंतर नहीं आएगा।

2) **वैधता –** शिक्षार्थी के जिस पक्ष की जाँच करना चाहते हों, उसी की जाँच के अनुकूल ही प्रश पत्र हो। अर्थात् परीक्षा का उद्देश्य निश्चित हो। उदाः शिक्षार्थी के भाषा–ज्ञान–मापन के लिए भाषा संबंधी प्रश्न हों तथा भाषा संबंधी जाँच की जाए। विषय की आंतरिक (जैसे सामान्य ज्ञान आदि की) जाँच यहाँ न हो।

3) **वस्तुनिष्ठता –** प्रश्न का उत्तर निश्चित हो। तथा एक उत्तर ही हो। परीक्षक बदलने पर भी अंकन में अंतर न आए। वैयक्तिक पसंद या नापसंद को स्थान न दें। पूर्णतः निष्पक्ष प्रश्नों का चयन करें।

4) **व्यापकता –** सीखने से संबंधित अधिक से अधिक अंशों का समावेश प्रश्न पत्र में हों। सभी प्रश्न पाठ्यक्रम संबंधी हों।

5) **विभेदीकरण –** व्यक्तिगत भेदों को ध्यान में रखकर जाँच कार्य करें। सभी प्रकार के शिक्षार्थियों की आयु, मानसिक स्तर आदि को ध्यान में रखकर प्रश्न किए जाएँ। मंद गति से सीखने वाले शिक्षार्थियों को भी अनुकूलता हो।

   शब्द भण्डार में वृद्धि सम्बन्धी मूल्यांकन के लिए मौखिक एवं लिखित दोनों रूपों का प्रयोग किया जा सकता है। जिसमें चित्र, चार्ट, टेपरिकार्डर द्वारा सुनी हुई ध्वनियों का पुर्नउच्चारण, उन्हें पहचानना और लिखना आदि का प्रयोग करेंगे।

   पढ़ने के कौशल का मूल्यांकन करने के लिए श्यामपट पर लिखे, सुभाषित, फलक, सूचनापट आदि का प्रयोग किया जा सकता है, जिसमें उचित आरोह अवरोह, स्पष्ट उच्चारण आदि को ध्यान में रखें।

   लिखने के कौशल के मूल्यांकन के लिए सुन्दर–सुडौल, स्पष्ट, सही लेखन, पाठ को समझकर उसके शीर्षक, सारांश सांक्षिप्तीकरण लेखन का प्रयोग किया जा सकता है। इसके लिए 15 अंक निर्धारित करें।

सुनने के कौशल के मूल्यांकन के लिए मौखिक अंशों को रखा जाएगा। टेपरिकार्डर, रेडियो को सुनने में एकाग्रता, कविता सुनना इनके साथ साथ बोलने के कौशल का भी मूल्यांकन होता है। इसके लिए 15 अंक लिए जा सकते हैं।

व्याकरण तथा भाषा प्रयोग के लिए भी 15 अंक निर्धारित कियें जा सकते हैं।

शब्द कोष तथा सहायक ग्रंथ के प्रयोग के लिए 10 अंक निर्धारित करें।

उदाहरण के लिए नौवीं कक्षा की पाठ्य पुस्तक के आधार पर संकलनात्मक/योगात्मक मूल्यांकन के लिए 80 अंकों का एक प्रश्न पत्र दिया जा रहा है

संकलनात्मक मूल्यांकन के लिए
प्रश्न पत्र का एक नमूना

समय : 2.30 घंटे कुल अंक – 80

भाग – A – पढ़ना (20 अंक)

1) प्रस्तुत पद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :– 5 अंक

जिसकी रज में लोट–लोट कर बड़े हुए हैं,
घुटनों के बल सरक सरक कर खड़े हुए हैं।
परमहंस सम बाल्यकाल में सब सुख पाए,
जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलाए।
हम खेले–कूदे हर्ष–युत जिसकी प्यारी गोद में।

पालन पोषण और जन्म का कारण तू ही,
वक्षस्थल पर हमें कर रही धारण तू ही।
अभ्रंकश प्रासाद और वे महल हमारे,
बने हुए हैं अहो ! तुझी से, तुझ पर सारे।
हे मातृभूमि! जब हम कभी शरण न तेरी पाएंगे,
बस सभी प्रलय के पेट में सभी लीन हो, जाएंगे।।

इस धरती पर मिट्टी में (a) _____ कर मानव बडा हुआ है। वह (b) _____ के बल चल चल कर खड़ा हुआ है, तथा परमहंस जैसे सुख (c) _____ में प्राप्त किया है। इस भूमि के कारण ही धूल भरे (d) _____ कहलाए। ऐसी (e) _____ को देख कर मन प्रसन्न क्यों न हो? तू ही मानव के जन्म और (f) _____ का कारण रही है। तू हमें अपने (g) _____ पर धारण कर रही है।

इस धरती पर ही बड़े–बड़े भवनों और (h) _____ का निर्माण हुआ है। जब हमें धरती की (i) _____ नहीं मिलेगी तो सब (j) _____ में विलीन हो जाएंगे।

2) प्रस्तुत गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 5 अंक

गया हड़बडाकर भीतर से निकला और बैलों को पकडने चला। वे दोनों भागे। गया ने पीछा किया। और भी तेज हुए। गया ने शोर मचाया। फिर गाँव के कुछ आदमियों को भी साथ लेने के लिए लौटा। दोनों मित्रों को भागने का मौका मिल गया। सीधे दौड़ते चले गये। यहाँ तक कि मार्ग का ज्ञान न था। जिस परिचित मार्ग से आये थे, उसका यहाँ पता न था। नये नये गाँव मिलने लगे। तब दोनों एक खेत के किनारे खड़े होकर सोचने लगे, अब क्या करना चाहिए।

हीरा ने कहा – 'मालूम होता है, राह भूल गये।'

तुम भी बेतहाशा भागे। वहीं उसे मार गिराना था।' उसे मार गिराते, तो दुनिया क्या कहती? वह अपना धर्म छोड़ दे, लेकिन हम अपना धर्म क्यों छोड़े?

1) 'गया' शब्द का प्रयोग इस अर्थ में किया गया है –
A) व्यक्ति B) सर्वनाम C) काल वाचक D) जानवर

2) भागने का मौका इसे मिला –
A) गया को B) गायों को C) बैलों को D) गाँव के लोगों को

3) नए नए गाँव मिलने लगे –
A) भागते हुए B) दूसरे गाँव जोत हुए C) घूमते हुए D) टहलते हुए।

4) 'हीरा' इसका नाम था –
A) व्यक्ति B) गाय C) लड़की D) बैल

5) 'हीरा' यह नहीं छोड़ना चाहता था –
A) धर्म B) घर C) गाँव D) मार्ग

3) प्रस्तुत अनुच्छेद को पढ़कर दिए गए वाक्यांशों को पूरा कीजिए : 5 अंक

उस आदमी को रोटी खिलाने के लिए मैंने घर में कह दिया। रोटी खाने के बाद उसने कहा – माँ जी, सच बताऊँ, आपको भी न बताऊँ तो किसे बताऊँ। ''अन्न दाता सुखी भव।'' आपने मुझे रोटी दी, अब तो मुझे बताना ही पड़ेगा। किसी का दुःख देखकर मेरा हृदय तड़पता है। दुःख दूर करने के लिए ही भगवान ने मुझे सेवा के लिए भेजा है। इसलिए मैं किसी की भी सेवा करने से इनकार नहीं करता हूँ। एक महीने पहले की बात है। यहाँ पास के एक गाँव में भले दिल का एक

किसान रहता था। उसकी माँ बहुत बीमार थी। लोगों के विश्वास और प्रेम के कारण मैं भी ध्यान पूर्वक दवाओं को तैयार करता हूँ। किसान की माँ को मेरे पहुँचने से तसल्ली मिल जाएगी। दवाइयाँ भी मेरी बहुत कीमती होती हैं। इधर-उधर की चीजें उसमें नहीं डालता हूँ। केसर, कस्तूरी जैसी कीमती चीजें उसमें होती हैं। जिन्हें मैं दवाइयाँ देता हूँ, उनकी बीमारी गायब हो जाती है। सब भगवान की कृपा है। इसमें मेरी क्या ताकत है?

1. उस आदमी ने खाना खाने के बाद चैन की साँस ली और कहा .....।
2. वह स्वयं को भगवान का ..... समझता था।
3. पास के गाँव में ..... बीमार थी।
4. उस आदमी ने कहा कि उसकी दवाइयाँ ..... हैं।
5. उसकी दवाइयों में ..... आदि चीजें होती हैं।

4) प्रस्तुत अनुच्छेद को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर चुनकर लिखिए : 5 अंक

यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह और भोले-भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा फरेब का रोजगार करने वाले फल फूल रहे हैं। ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है, सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। ऐसी स्थिति में जीवन के मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगी है। सदा मनुष्य-बुद्धि नई परिस्थितियों का सामना करने के लिए नए सामाजिक विधि निषेधों को बनाती है, उनके ठीक न साबित होने पर उन्हें बदलती है।

1. आजकल इनका बोल बाला है .....

   A) ईमानदारों का B) बेइमानों का C) गरीबी का D) धनवानों का

2. सच्चाई इनके हिस्से का पर्याय मानी जाने लगी है .....

   A) मूर्खों B) श्रमजीवियों

   C) भीरू व बेबस लोगों D) मेहनती

3. इसके बारे में लोगों की आस्था डाँवाडोल है .....

   A) जीवन B) जीवन के मूल्य के C) जीविका D) जीविकोपार्जन

4. ईमानदारी का विलोम शब्द है .....

A) नईमानदारी B) बेईमानदारी C) बेईमान D) बेइमानी

5. नवीन सामाजिक विधि निषेध इसलिए बनते हैं .....

A) मानव की बुद्धि के लिए B) परिवर्तन के लिए

C) नवीनता के लिए D) नई परिस्थितियों को सामना करने के लिए

भाग – B – लिखना (20 अंक)

5. 'मेरा बचपन' पाठ के आधार पर अपने प्रिय व्यक्तित्व का संक्षिप्त विवरण दीजिए :– 4 अंक

6. (a) प्रधानाध्यापक से तीन दिन की छुट्टी माँगते हुए एक पत्र लिखिए – 4 अंक

(b) पुस्तक विक्रेता से हिन्दी की व्यक्तित्व विकास संबंधी पुस्तकों को माँगने के लिए पत्र व्यवहार कीजिए। 4 अंक

7. (a) अपने आस–पास के वातावरण को ध्यान में रखते हुए सुधार के लिए आवश्यक कदम उठाने के बारे में संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। 4 अंक

(b) अपने प्रिय त्योहार का वर्णन करते हुए संक्षिप्त लेख लिखिए । 4 अंक

भाग – C – व्याकरण (20 अंक)

8. दिए गए अनुच्छेद में सही व्याकरणांश भर कर पूरा कीजिए। 4 अंक

अब रथीन बाबू (a) _____ हँसने की बारी थी, जिसने आमरण अनशन किया था – देवलाली कैंप (b) _____ सच नहीं लग रहा है (c) _____ तुम वही दिवाकर दास हो। जिसने अपने रक्त (d) _____ बापू को पत्र लिखा था उनके जन्मदिन पर।

(a) कि, की, से, में

(b) से, पर, में, का

(c) को, कि, की, का

(d) ने, को, से, पर

9. **संवाद को पूर्ण कीजिए।** **4 अंक**

राधा : (दरवाजा खोलते हुए) – (a) _____ ?

मीना : मैं हूँ।

राधा : (आश्चर्य से) अरे! मीना (b) _____ ?

मीना : मैं तो अभी–अभी आई हूँ।

राधा : अब तुम (c) _____ ?

मीना : मैं आजकल अपने मामा के यहाँ (d) _____ !

(a) क्या है?, कहाँ है?, कैसा है?, कौन है?

(b) तुम कब आई?, तुम कब गई?, तुम कहाँ हो?, तुम कौन हो?

(c) क्या हो?, कहाँ रहती हो?, क्यों हो?, रुको?

(d) खाती है, पहनती है, रहती हूँ, जाती हूँ।

10. **दिए गए संवादों के आधार पर नीचे दिए गए अनुच्छेद को पूरा कीजिए।** **4 अंक**

प्रमोद : क्या निर्णय लिया आपने?

जीवनलाल : यही कि बहू की विदाई नहीं होगी?

प्रमोद : यदि आपने विदाई नहीं की तो बहन की क्या दशा होगी? माँ का हृदय भी टूट जाएगा।

जीवनलाल : ऐसा ही था तो दहेज पूरा क्यों नहीं दिया?

प्रमोद : अपनी सामर्थ्य के अनुसार जितना भी हो सका हमने दे दिया।

जीवनलाल : अपनी माँ से कहो कि अगर बेटी की विदाई चाहती हैं तो पहले उस घाव के लिए मरहम भेजें।

प्रमोद ने अपनी (a) _____ की विदाई के बारे में पूछा। पर जीवनलाल बहू द्वारा लाए गए (b) _____ से अप्रसन्न थे। प्रमोद के अनुसार उन्होंने अपनी (c) _____ के अनुसार विवाह किया था। विदा न होने पर बहन और माँ दोनों का (d) _____ टूट जाएगा।

11. (a) **शुद्ध वर्तनी वाला शब्द चुनिए :** **4 अंक**

1. अनुयायीनी 2. अनूयायिनी 3. अनुयायिती 4. अनुयायिनी

(b) समुद्र, गज, सिंधु, वारिधि – **विजातीय/बेमेल शब्द चुनिए।**

(c) **किस शब्द में 'इयाँ' जोड़ने पर बहुवचन का शब्द बनता है –**
वस्तु, परीक्षा, लड़की, किताब

(d) **'प्र' उपसर्ग लगाकर सही अर्थ वाला शब्द चुनिए।**
फल, हार, आहार, दिन

12. **प्रस्तुत वाक्यों में से गलत प्रयोग को चुनकर उसके स्थान पर सही प्रयोग के शब्द लिखिए।** **4 अंक**

1. कुमारी नोबेल अनुयायी बने।
2. विवेकानंद ने प्रयत्नशील रही।
3. स्वमिजी कोशीश कि।
4. उनका भाषण गंभीर थी।

भाग – D – साहित्य (20 अंक)

13.A. **दिए गए उद्धरण को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।** **3 अंक**

धीरे–धीरे वृद्धा की आँखों की ज्योति जाने लगी। चाँदनी में रास्ता टटोलकर वह रेंग रही थी। आगे या पीछे से कोई गाड़ी आती दिखती तो वह एकदम किनारे खड़ी हो जाती और कहती – ''निकल जाओ, बेटी! अपनी तो वह उम्र ही नहीं रही।''

प्र.1 'वृद्धा' किसको सम्बोधित है –

A) यात्री B) टायर C) नारी D) बस

प्र.2 'चाँदनी में रास्ता टटोलकर रेंगना' से तात्पर्य क्या है –

A) धीरे–धीरे चलना B) तेजी से चलना
C) नापना D) ढूँढ़ना

प्र.3 ''निकल जाओ, बेटी!'' किसके लिए प्रयुक्त है –

A) बेटी B) अन्य गाँडियों C) पेड–पौधों D) यात्रियों।

अथवा

''वे कहते – जब तुम नमाज़ पढ़ते हो तो तुम अपने शरीर से इतर ब्रह्मांड का एक हिस्सा बन जाते हो, जिसमें दौलत, आयु, जाति या धर्म–पंथ का कोई भेद भाव नहीं होता।''

प्र.1 प्रस्तुत उद्धरण किसके जीवन की घटना का हिस्सा है?

प्र.2 'वे कहते' इसमें वे कौन हैं?

प्र.3 'इतर' शब्द का समानार्थक शब्द क्या है?

13.B. प्रस्तुत उद्धरण पढ़कर बताइए कि इसे किस पाठ से लिया गया है, किसने कहा और किससे कहा है? **3 अंक**

''जुलूस कौन बनाएगा? तुम झंडा उठाना, हम जुलूस बनाकर चलेंगे पीछे–पीछे।''

14. **किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दो–तीन वाक्यों में लिखिए :** **8 अंक**

प्र. a. विवेकानंद ने जनता को ललकार कर क्या करने को कहा?

प्र. b. भाई को बहन कैसे विदा करती है?

प्र. c. बंधुओं को बस में बिठाने के लिए आए हुए लोग बस देखकर उसके बारे में क्या सोच रहे थे?

प्र. d. मौसी का स्वभाव कैसा था?

प्र. e. कलाम और जलालुद्दीन परस्पर समय कैसे बिताते थे?

प्र. f. 'शिक्षा' कविता के आधार पर मनुष्य को जीवन में सीख कैसे मिलती है? बताइए।

प्र. g. 'मेरी अभिलाषा' कविता में कवि ने मनुष्य को प्रकृति से किन गुणों को ग्रहण करने का संदेश दिया है?

15. **किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए।** **6 अंक**

प्र. a. शम्सुद्दीन अखबारों के वितरण का कार्य कैसे करते थे?

प्र. b. कवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने भारतमाता का गुणगान किन शब्दों में किया है?

प्र. c. परिश्रम का महत्व कवि ठाकुर गोपालशरण सिंह ने किन शब्दों में व्यक्त किया है?

प्र. d. कजाकी अथवा मालवजी की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

----- 0 -----

पाठ्य पुस्तक में निहित मूल्य

1. प्रस्तुत नौवीं कक्षा के पाठ्य पुस्तक में शिक्षार्थियों में नैतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, समाज सेवा, राष्ट्र प्रेम, आत्मविश्वास आदि भावनाओं के सतत विकास का प्रयत्न किया गया है।

2. राष्ट्रीय त्यौहार, राष्ट्रीय झंडे के प्रति स्वाभिमान व गौरव बढ़ाने का प्रयास किया गया है।

3. भाषा का उद्देश्य न केवल संदेश देना है, बल्कि मनोरंजन भी मिलें। इस दृष्टि से दिल बहलानेवाले व्यंग्य निबंधों को रखा गया है।

4. शिक्षार्थियों में मातृप्रेम, शिशु के स्वाभाविक गुणों को दर्शाने वाले और पारिवारिक प्रेम के प्रति रुचि उत्पन करने वाली सामग्रियों का संचयन किया गया है।

5. व्यक्तित्व निर्माण करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण मनीषियों के प्रेरणादायक जीवन के बारे में समझाया गया है।

6. हिंदी भाषा के प्रति प्रेम, क्रियाशीलता, वार्तालाप, मौखिक अभिव्यक्ति को प्रेरणा देने से संबंधित उद्देश्यों की पूर्ति की गयी है।

7. शिक्षार्थियों में पर्यटन की भावना को जाग्रत करने के लिए स्थानीय विशेषताओं को परिचय कराने की उद्देश्यों की पूर्ति हेतु ऐतिहासिक निबंधों की रचना भी की गई है।

8. सौहार्दता, शिष्टाचार, भावैक्यता आदि गुणों का विकास करने वाली कहानियों को स्थान दिया गया है।

9. स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है। इस मनोवैज्ञानिक तत्व के आधार पर न केवल शारीरिक और स्वास्थ्य संबंधित विचारों को ही नहीं बल्कि खेल कूदों से मिलने वाले अन्य प्रयोजनों को भी दर्शाया गया है।

10. शिक्षार्थियों में प्रकृति प्रेम, पवित्र नदियों की कल्पना कराने वाले विचारों से संबंधित शैक्षिक सामग्री का भी समावेश पाठ्य पुस्तक में किया गया है।

11. देश प्रेम, सामाजिक ऐक्यता आदि मूल्यों से संबंधित कविताओं का चयन किया गया है।

12. कठिन परिश्रम से होनेवाले प्रयोजनों को कविता के माध्यम से दर्शाया गया है।

13. शिक्षार्थियों को व्यक्तिगत अभिलाषा को प्रकट करने से संबंधित प्रोत्साह न देने वाली भावनाओं से ओत-प्रोत कविताओं को संकलित किया गया है।

14. रागात्मक प्रवृत्तियों को विकसित करने की दृष्टि से विनम्रता, करूणा, सेवा मनोभाव, भगवान के प्रति श्रद्धा से संबंधित कविताओं को स्थान दिया गया है।

15. वसुदैव कुंटुंबकम् की परिकल्पना से शिक्षार्थी परिचित हों, उसमें वैश्विक प्रेम की जागृति हो इस दृष्टि से ऐसे मूल्यों को विकसित करने वाली कविताओं को चुना गया है।

16. प्राचीन हिन्दी कवियों का परिचय छात्रों को मिले इस दृष्टि से संत कबीर के नीति परक दोहों को पाठ्य पुस्तक में सम्मिलित किया गया है।

17. मौखिक अभिव्यक्ति को ध्यान में रखते हुए विविध प्रकार के पत्रलेखन, विस्तृत व्याकरण का परिचय भी कराया गया है।

----- 0 -----

कक्षा में हिन्दी की भूमिका

ज्ञान निर्माण में भाषा की भूमिका का बड़ा महत्व है। ज्ञान निर्माण और भाषा का अटूट संबंध है। भाषा के बिना ज्ञान के सृजन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। ऐसे में पाठ्य पुस्तकें केवल निर्देश देने तक ही सीमित हों तो शिक्षार्थियों से ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में सक्रियता की उम्मीद नहीं की जा सकती।

भाषा यथार्थ को उद्घाटित करती है, पर साथ ही इसमें कल्पनापरक तत्व भी होते हैं। पद्य, गद्य और नाटक शिक्षार्थियों की भाषिक संवेदना को स्फूर्ति प्रदान करने के साथ-साथ हमारे जीवन के सौन्दर्यात्मक पहलू को समृद्ध भी करते हैं। यह शिक्षार्थियों के पढने-लिखने की क्षमता के स्तर को भी ऊँचा उठाते हैं। भाषा किस्से-कहानियों, हास्थ-व्यंग्यों, कहावतों, मजाक, नकल, को भी अंतर्निर्हिव किए होती है यह रोजमर्रा के जीवन के हिस्से होते हैं। यह कहीं से भी स्वायत्त इकाई नहीं होती जो सांसारिक क्रिया कलापों से मुक्त हों।

मार्गदर्शक को कक्षा में शुद्धता (भाषा संबंधी) बरकरार रखने की जिद शिक्षार्थियों से नहीं करना चाहिए। बल्कि ऐसा माहौल तैयार करे कि बच्चे भाषा के सौन्दर्यात्मक पहलू की सराहना करें। और स्वतः ही भाषिक रचनात्मकता की ओर अग्रसर करने में मदद दे।

शिक्षार्थियों को अपने अनुभवों के आधार पर अपने आस-पास की दुनिया से दूरस्थ संसार को जोड़ कर कल्पना शक्ति से वहाँ की सैर करने का अवसर दें।

मार्गदर्शक को कक्षा में पाठ्यपुस्तक तथा अपने भाषाई कौशल से ऐसा वातावरण निर्माण करना है जो किस्से कहानियों, कविताओं से लबरेज हो। जिनमें मूल्य और मानवीय संवेदनाएँ स्वतः मुखरित हो रही हों। यह तय करना होगा कि इन्हें (मूल्यों को) उभारने के लिए बलपूर्वक कोशिश न किया जाए और मानकर चलें कि मूल्य तो शिक्षार्थी की जिंदगी में सहज रूप से शामिल रहते हैं। मार्गदर्शक परंपरागत सोच का निर्वाह करने का मोह छोडें और समझ लें कि ग्रहणशीलता रहित भाषा अधिक दूर तक नहीं चल सकती।

प्रत्येक शिक्षार्थी की सीखने की अपनी ही गति होती है। मार्गदर्शक को सकारात्मक दृष्टिकोण रखकर और शिक्षार्थी की सराहना करके इस गति को बढ़ा सकते हैं।

जीवन से जोड़े बिना भाषा को सीखने-सिखाने की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जब हम किसी भी कविता, कहानी या लेख को जीवन से जोड़ देते हैं तब भाषा में परिवेश का समावेश स्वतः ही हो जाता है। इसके लिए अतिरिक्त प्रयास की आवश्यकता नहीं पड़ती।

जिज्ञासु व्यक्ति अर्थात् शिक्षार्थी किसी भी समस्या के हर पहलू पर विचार करता है। अपनी एक राय बनाता है। शिक्षार्थी की जिज्ञासा का समाधानात्मक पहलू उसे स्वयं जानने, ढूँढने को प्रेरित करना है। उचित दिशा में मार्गदर्शन करना हमारा कर्तव्य है।

मार्गदर्शक का प्रयास तथा विद्यालय की व्यवस्थाएँ इस बात पर केन्द्रित हों कि वे शिक्षार्थी का सम्पूर्ण विकास कर सकें। पढ़ना-लिखना इस समझ का एक छोटा-सा हिस्सा मात्र है। कविताएँ मुखर विमर्श हैं। मार्गदर्शक को उनमें अर्थ नहीं, बल्कि ध्वनियाँ ढूँढना है। शिक्षार्थी यह काम स्वतः कर लेंगे, मार्गदर्शक स्वयं भी कविता आनंद लेते हुए शिक्षार्थी को भी आनंद लेने देंगे। शिक्षार्थियों की अभिव्यंजना की दृष्टि से विनोदवृत्ति, हास-परिहास, रहस्य रोमांच, आंचलिकता सभी कुछ मौजूद है।

नौवीं कक्षा की 'हिन्दी वल्लरी' की सामग्री में ठहराव न होकर बदलाव है, प्रवाह है। उसी प्रकार शिक्षण पद्धतियों में भी बदलाव की माँग करती हैं। यह बच्चों के साथ अंतःक्रिया करना चाहती है और मार्गदर्शक के पक्ष में उनकी बौद्धिक सिंचाई की मांग करती हैं। यह मांग करती हैं कि सभी विधाओं को एक जैसी प्रकृति का समझने वाली प्रकृति से बचा जाए। इस पाठ्य पुस्तक में शिक्षार्थी की स्वभावगत प्रवृत्तियों को ध्यान में रखकर पाठों कविताओं का सम्मिलन किया गया है। शिक्षार्थी समूह में अच्छी तरह सीखते हैं, प्रश्न करके उत्तर ढूँढते हैं। मार्गदर्शक की योग्यता और क्षमता, पाठ की प्रकृति और कलेवर, कक्षा का प्रोफाइल, उसमें मौजूद विविधता यह सब पाठ के मार्गदर्शन की तकनीक के बारे में सोचने में मदद करते हैं।

आकलन और मूल्यांकन के संदर्भ में इस पुस्तक की प्रकृति को समझना होगा। कल्पना, विश्लेषण, समालोचनात्मक, सृजनात्मक चिंतन, परिवेशीय सजगता से जुड़े सवाल बनाने होंगे। तथा निश्चित रूप से एक-सा बँधा-बँधाया उत्तर पाने की आदत से बचना होगा। 'निरीक्षण' जैसे भाव पर भी अंकुश लगाना होगा, बच्चों के भाषा प्रयोग की क्षमता पर विश्वास करना होगा।

शिक्षार्थियों को अपने स्वयं के विचार सबके सामने रखने का आत्मविश्वास दें। उन्हें समस्याओं को पहचानने तथा उनका मौलिक समाधान ढूँढने का भरपूर अवसर दें। उनमें इस योग्यता का विकास भी करें कि वे अपने मत या विचार के समर्थन में उदाहरण देकर अपने विचार को सही सिद्ध कर सकें। समस्याओं और उनके समाधानों की खोज़ के दौरान मार्गदर्शक को बच्चों के समान जिज्ञासु होकर तत्पर शिक्षार्थी बनकर देखना होगा।

मार्गदर्शन की नवीन पद्धति

समय परिवर्तन शील है। इस प्रकार शिक्षण पद्धति में भी सामाजिक नियम के अनुसार परिवर्तन आवश्यक है। आज की परिस्थिति में बाल केन्द्रित पाठ्यक्रम, बालकेन्द्रित शिक्षण पद्धतियों का उपयोग होना चाहिए।

नवीन पद्धति की आवश्यकता मूल्यांकन पद्धति में बदलाव भी आवश्यक है। परिवर्तनशील समाज में निरंतर और व्यापक मूल्यांकन को शिक्षार्थियों के लिए अनुकूल कहा जा रहा है। विद्यालयी परिवेश में सिखाने की नवीन पद्धति से तात्पर्य शिक्षार्थी को स्वयं सीखने सोचने, करने और अभिव्यक्त करने का पूरा अवसर दिया जाना है। इसके लिए भिन्न भिन्न शिक्षण तकनीकों, क्रिया कलापों को शामिल कर अपने मार्गदर्शन को रोचक तथा सफल बनाना मार्गदर्शक का उद्देश्य होना चाहिए। विविध पद्धतियों में शिक्षार्थियों को अभिहस्तांकन, प्रदत्त कार्य, श्यामपट पर लेखन के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। प्रत्येक शिक्षार्थी की अभिरुचि उसकी परिस्थिति के अनुकूल कार्य का आयोजन करने का प्रयास हो, जिससे सभी शिक्षार्थियों को अपने कौशल, अपनी कार्य क्षमता, अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन का मौका मिले।

मार्गदर्शन उसे, दिशा प्रदान करे, न कि दिशा भटकाने का कार्य करे। इसलिए मार्गदर्शक को सदा सतर्क, सिखाने की नवीन पद्धति एवं नवीन तकनीकी, क्रिया कलापों के आयोजन के प्रति जिज्ञासु और उत्साही होना चाहिए।

प्रदत्त कार्यों के विषय ऐसे हों जो शिक्षार्थियों को सरलता से (ढूँढने पर) उपलब्ध हो सके। उनको कार्य की एकरूपता न लगे। अन्यथा नीरसता का अनुभव करेंगे।

इस प्रकार मार्गदर्शन हेतु नवीन पद्धतियों का अनुसरण तथा उन्हें अपने मार्गदर्शन में समागत करना आज की परिस्थिति की सशक्त माँग है।

कक्षा में पाठ्य–पुस्तक का महत्व

कक्षा में पाठ्य पुस्तक एक साधन है व साध्य है। परिभाषा : ''एक सुनिश्चित पाठ्यक्रम के अध्ययन के प्रधान साधन के रूप में एक सुनिश्चित शिक्षा के स्तर पर प्रयोग करने के लिए एक सुनिश्चित विषय पर सुव्यवस्थित रूप से लिखी हुई पुस्तक को पाठ्य पुस्तक कहते हैं'' – कार्टर गुड (हि.शि.सि. पृ. 403)

पाठ्य पुस्तक के महत्व को निम्नलिखित अंशों से पहचाना जाता है।

- मार्गदर्शक को दिशा निर्देश करता है।
- शिक्षार्थी के ज्ञान विकास में मदद करता है।
- भाषाई कौशलों के विकास में सहायक होता है।
- पाठ्य पुस्तक से अर्जित ज्ञान को शिक्षार्थी स्थायी बनायेगा।
- भाषा पर अधिकार प्राप्त करने में पाठ्य पुस्तक मदद करेगा।
- ज्ञान के साथ भाषाई खेल–मनोरंजन का काम भी पाठ्य पुस्तक से होता है।
- स्वाध्याय के विकास में पाठ्य पुस्तक अत्यंत महत्व पूर्ण होता है।
- प्रश्न पत्रिका की तैयारी में पाठ्य–पुस्तक का स्थान महत्व पूर्ण होता है।
- अच्छा मार्गदर्शक पाठ्य पुस्तक को अपना गुलाम बनाता है। लेकिन मार्गदर्शक पुस्तक का गुलाम नहीं होता है।
- पाठ्य पुस्तक में राष्ट्रीयता स्वास्थ्य संबंधी दर्शनीय स्थल व ग्राम्य जीवन से संबंधित पाठ होना चाहिए।
- पाठ्य पुस्तक का नाम इतना आकर्षक हो कि वह पढ़ने के लिए प्रेरित करे।
- पाठ्य पुस्तक के पाठ कल्पना शक्ति के विकास में सहायक होना चाहिए।
- पाठ्य पुस्तक से शिक्षार्थी में स्वाध्याय की रुचि उत्पन्न होनी चाहिए।

- ❖ पाठ्य पुस्तक में चित्रों तथा रेखाचित्रों की संख्या पर्याप्त मात्रा में होनी चाहिए।
- ❖ पाठ्य पुस्तक में विषय विविधता व शैली विभिन्नता होनी चाहिए।
- ❖ गद्य पाठों में सरल और छोटी कहानियाँ होनी चाहिए।
- ❖ भाषा की दृष्टि से पाठ्य पुस्तक में सरल शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

----- 0 -----

कक्षा में मार्गदर्शक और शिक्षार्थी की सहभागिता

कक्षा में सीखने-सिखाने का वातावरण सीखने सिखाने की सफलता को तय करता है। भयमुक्त परिवेश शिक्षार्थी को स्वच्छन्द रूप से भाषा-विषय सीखने में सहायक होगा। मार्गदर्शक को चाहिए कि सबसे पहले शिक्षार्थी में आत्मविश्वास जगाए, दृढ़ करे। तथा उनके साथ आत्मीयता से पेश आए। इससे कक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया सुगम और सरलता से चल सकती है। कक्षा में जब तक शिक्षार्थी पूर्ण रूप से सहभागी हैं तब तक ही सिखाने की व मार्गदर्शन की प्रक्रिया हो सकती है। तात्पर्य यह है कि यदि शिक्षार्थी की रुचि कम हो गयी है तो सिखाने या मार्गदर्शन का विधान बदलें।

क्रियाकलाप की प्रविधि में रोचकता लाने के लिए उन्हें खेल, चुटकुले, रोचक किस्से आदि सुन-सुना कर परिवर्तन लाएँ तथा कक्षा को रोचक बनाएँ। मार्गदर्शक शिक्षार्थियों की रुचि को ध्यान में रखते हुए विविध क्रियाकलापों के माध्यम से मार्गदर्शन करें। उन्हें स्वयं जिज्ञासु बनने का अवसर प्रदान करें। विश्वासपात्र बनें। निःसंकोच शिक्षार्थी अपनी समस्या तथा अपना कौतूहल कक्षा में व्यक्त कर सकें। परस्पर सहभागिता उत्तम परिणाम प्रस्तुत करती है।

मार्गदर्शक की सफलता शिक्षार्थियों को खूब और सहणता से सिखाने में है। शिक्षार्थियों की कक्षा में पूर्ण सहभागिता मार्गदर्शक के कार्य को सरल बनाती है।

मार्गदर्शक उन्हें प्रोत्साहित करते हुए अतिरिक्त विषय संग्रह के लिए प्रेरित करें। उन्हें सराहें। जिससे शिक्षार्थियों का आत्मविखास बढता है और वे पूरे उत्साह से कक्षा की क्रियाओं में भाग लेते हैं।

हिंदी मार्गदर्शन के उद्‌देश्य

1. भाषा प्रेम।
2. भाषाई कौशलों का विकास।
3. रसास्वादन।
4. व्यावहारिक व्याकरण का परिचय।
5. राष्ट्रीय एकता का प्रचार करना।
6. भाईचारे की भावना।
7. सृजनात्मक भावना का विकास।
8. ज्ञानात्मक भावना का विकास।
9. सामाजिक जीवन में लिखित तथा कथित अभिव्यक्ति का विकास करना।
10. साहित्यिक विधाओं का ज्ञान प्रदान करना।
11. श्रव्य और दृश्य उपकरणों से प्रभाव पूर्वक हिंदी सिखाना।
12. हिंदी से संबंधित संवाद, वार्तालाप, यात्रा-विवरण, समाचार, विज्ञापनों से शिक्षार्थी को परिचय कराना।
13. हिंदी भाषा के यथावत् उच्चारण का परिचय कराना।
14. श्रवण कौशलों का परिचय करानेवाले परिवेश का निर्माण करना।
15. मौखिक अभिव्यक्ति का अधिक अवसर प्रदान करना।
16. सरल गद्‌यांशों के द्वारा रचनात्मक विकास का अभिवृद्धि करना।
17. ज्ञान-क्षेत्र तथा विवेक का निरंतर विकास करते हुए चरित्र निर्माण कराना।
18. पाठ्य पुस्तकों में निहित ज्ञान भंडार का अवलोकन कराना तथा बालकों को स्वाध्याय के प्रति रुचि उत्पन्न करना।

19. हिंदीतर भाषी हिंदी प्रदेशों में जाने पर शिक्षार्थी में सरल हिंदी का प्रयोग करने की क्षमता बढ़ाना।

20. दैनंदिन जीवन से संबंधित विविध तथा विशिष्ठ विषयों पर अपने विचार सरल हिंदी में अभिव्यक्त करने की क्षमता बढ़ाना।

21. शिक्षार्थी में हिंदी के सरल साहित्य को अभिरूचि तथा अर्थबोध के साथ पढ़ने में योग्य बनाना।

22. शिक्षार्थी को हिंदी में सहज शुद्ध एवं प्रवाह के साथ बोलने की क्षमता बढ़ाना।

23. शिक्षार्थी में सामाजिक मूल्यों का विकास करना।

24. चित्रों से जोड़कर पढ़ने की आदत बढ़ाना।

25. हिंदी भाषा के द्वारा राष्ट्रप्रेम की भावना को जागृत करना।

26. शिक्षार्थी में अवलोकन शक्ति का विकास करना।

27. हिंदी भाषा के द्वारा शिक्षार्थी को पर्यावरण एवं प्रदूषण के प्रति जागृत करना।

28. शिक्षार्थी को वार्तालाप का अवसर प्रदान करना।

29. चिंतन शक्ति का विकास करना।

30. बाल साहित्य के प्रति रुचि प्रदान करना।

31. प्रत्येक छात्र पर व्यक्तिगत ध्यान देते हुए उनकी कठिनाई को दूर करना।

32. समय-समय पर शिक्षार्थी की उपलब्धियों को जाँच कर मूल्यांकन कर अभिलेख तैयार करना।

33. पुस्तक पढ़ने के प्रति शिक्षार्थी में रुचि उत्पन्न करना।

क्रिया योजना

विषय, कक्षा एवं स्तर के अनुकूल पाठ्य पुस्तक को ध्यान में रखते हुए एक क्रिया-योजना की आवश्यकता होती है। जिसकी सहायता से कक्षा में मार्गदर्शक अपनी योजनानुसार सरलता से शिक्षार्थियों को मार्गदर्शन दे सकता है। कभी-कभी समयानुसार उसमें थोडा-बहुत परिवर्तन किया जा सकता है, जो समय की माँग हो सकता है। कक्षा के अनुकूल एक पूर्व क्रिया योजना पाठ संबंधी अधिगम अंशों को शिक्षार्थियों को शीघ्रता से सिखाने में मददगार होती है। प्रत्येक पाठ, गद्य हो या पद्य या व्याकरण अंश उसके अनुकूल भाषा कौशलों को ध्यान में रखते हुए एक प्रारूप की तैयारी अवश्य होनी चाहिए। वार्षिक पाठ योजना के साथ-साथ वार्षिक क्रिया योजना मार्गदर्शन को सफल बनाने में पूर्णतया सहायक होगी। किस पाठ या किस पद्य के लिए किन-किन क्रिया-कलापों का आयोजन पाठ को रोचक एवं सुगम बनाएगा। किन सहायक सामग्रियों की व्यवस्था की जानी चाहिए। किन गतिविधियों, खेलों (भाषाई खेलों) का आयोजन पाठ के अनुसार उत्तम होगा। किन चार्टों, तालिकाओं, सी.डी., आदर्श प्रारूपों, खेलों की व्यवस्था तथा कितनी मात्रा में, कितनी अवधि तक सीमित होगी, इसका तात्कालिक प्रारूप तैयार करना होगा। शिक्षार्थियों की मानसिक स्थिति के अनुसार रोचक क्रियाकलापों का आयोजन कर कक्षा में रोचकता विषय के प्रति गहन रुचि उत्पन्न की जा सकती है। परिणामतः विषय को सिखाने में सुविधा होगी। शिक्षार्थी शीघ्रता से ग्रहण करेंगे।

कभी भी शिक्षार्थियों के साथ की जानेवाली बातचीत को व्यर्थ न समझें। उनमें विश्वास, धैर्य तथा मार्गदर्शक के साथ विषय सम्बन्धी प्रश्न पूछने की हिचाकिचाहट दूर करने में सुविधा आदि उद्देश्यों की प्राप्ति होगी। शिक्षार्थियों के शब्द भण्डार में वृद्धि, कविता के प्रति रुचि, विषय प्रेम, जिज्ञासा आदि मार्गदर्शक की क्रियायोजना पर निर्भर है। प्रदत्त कार्य हेतु विषय का चयन जो स्तर के अनुकूल तथा शिक्षार्थियों को सरलता से उपलब्ध हो सके आदि के लिए मार्गदर्शक सोच विचार कर निर्णय ले। वैयक्तिक योग्यता के अनुरूप प्रदत्त कार्य का आबंटन तथा जाँच कार्य किया जा सके। प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए तथा सामूहिक कार्य के लिए भिन्न-भिन्न कार्यस्तर दिए जाएँ तथा कार्य की पूर्णता के दौरान उनके प्रयासों तथा सफलता का सही अंकन हो सके। इसके लिए क्रिया योजना में ही विविध जाँच तालिका का अवसर हो। क्रिया योजना न केवल मार्गदर्शन बल्कि मूल्यांकन में भी सुविधाजनक होती है। मूल्यांकन कार्य में पूर्व निर्धारित योजना के तहत जाँच तालिका का स्तर होता है, जिसके अनुसार कार्य सुगम हो जाता है।

संसाधकों की समय सारिणी का विवरण

I. प्रथम दिवस–

- ❖ पंजीयन और मार्गदर्शन कार्यक्रम का उद्घाटन
- ❖ मार्गदर्शकों का परस्पर परिचय
- ❖ N.C.F. 2005 और R.T.E. 2009 तथा नौवीं कक्षा की हिन्दी पाठ्य पुस्तक

II. द्वितीय दिवस–

अवधि (5) –

- कक्षा में हिन्दी मार्गदर्शन के रचनात्मक विधान।
- भाषाई सामर्थ्यों और नौवीं कक्षा के स्तर पर इनको सिखाने/मार्गदर्शन के लिए उपयुक्त परिवेश निर्माण।
- पाठ्य पुस्तक के मूल्यों का संक्षिप्त परिचय।

अवधि (6) –

- ❖ रचनात्मकता/सृजनात्मकता के लिए विविध क्रिया–कलापों का परिचय।
- ❖ पाठों के मूल्यों का नैतिक महत्व तथा शिक्षार्थियों में इनकों आत्मसात करने की कला का विकास हेतु परिचय।
- ❖ क्रिया–कलापों के प्रकार, उनका कक्षा में आयोजन कैसे करें? संक्षिप्त विवरण।
- ❖ विविध सृजनात्मक गतिविधियों का निर्माण एवं कक्षा में शिक्षार्थियों की सहभागिता।

अवधि (7) –

- कविता पाठ को सफल बनाने के तरीके।
- कविता की रोचकता, शिक्षार्थी की पूर्ण सहभागिता कैसे हो?

अवधि (8) –

- ❖ विषयाधारित चर्चा – मार्गदर्शकों के परस्पर विचार और समस्या समाधान।
- ❖ समालोचनात्मक चर्चाएँ

III. तृतीय दिवस–

अवधि (9) –

- आदर्श कविता पाठ
- सीखने–सिखाने की प्रक्रिया से पूर्व क्रियाएँ
- सहायक क्रिया कलापों द्वारा कविता पाठ की सार्थकता
- कविता पाठ द्वारा शिक्षार्थियों में किन मूल्यों का विकास किया जा सकता है?
- कविता पाठ के अभ्यास संबंधी अंश
- विषय संबंधी चर्चा

अवधि (10) –

- ❖ प्रशिक्षार्थियों (मार्गदर्शकों) का समूह के रूप में विभाजन
- ❖ प्रत्यक्ष पाठ कविता की तैयारी
- ❖ आवश्यक सामग्रीयों, क्रिया–कलापों का निर्माण, आयोजन
- ❖ किसी एक समूह द्वारा पाठ प्रस्तुतीकरण की तैयारी

अवधि (11) –

- प्रशिक्षार्थियों के समूह द्वारा कविता का प्रत्यक्ष पाठ
- अन्य समूह द्वारा पाठ निरीक्षण
- पाठ की सफलता, कमजोरी और क्रिया–कलापों द्वारा शिक्षार्थी के सीखने के प्रतिशत को आँकना

- पाठ को सफल बनाने हेतु अन्य किन सामग्रियों का समावेश हो, इसकी चर्चा करना।
- तत्संबंधी चर्चा प्रत्येक समूह द्वारा की जाएगी।

अवधि (12) –

- ❖ कविता संबंधी व्याकरणांशों का चयन
- ❖ व्याकरणांशों के लिए आवश्यक क्रिया कलाप
- ❖ विविध मूल्यांकन क्षेत्र में शिक्षार्थी के कविता सीखने का मूल्यांकन
- ❖ मूल्यांकन की प्रविधि का कविता सिखाने के लिए उपयोग

IV. चतुर्थ दिवस–

अवधि (13) –

- गद्य पाठ के उद्देश्य, आवश्यक मूल्यों का प्रतिपादन आदि का चयन।
- गद्य पाठ का आदर्श प्रायोगिक रूप।
- पाठ संबंधी सिखाने के अंशों के लिए आवश्यक सामग्रियों का चयन।
- पाठान्त में समस्या–समाधान एवं चर्चा।

अवधि (14) –

- ❖ निरंतर एवं व्यापक मूल्यांकन तथा नवीन पाठ्य पुस्तक
- ❖ निरंतर मूल्यांकन के विविध तरीके और प्रविधियाँ।
- ❖ व्यापक मूल्यांकन के प्रकार।
- ❖ शिक्षार्थी और मार्गदर्शक के लिए इसका महत्व और उपयोग।

अवधि (15) –

- व्याकरण को शिक्षार्थी किस प्रकार सहज रूप से सीखें, किन क्रिया कलापों द्वारा पाठ के साथ–साथ व्याकरण कैसे सिखाएँ। मार्गदर्शक द्वारा इसे सहज कैसे बनाया जाए?
- सह उपकरणों का सही उपयोग कैसे करें?

अवधि (16)–

- ❖ गद्य, पद्य, जीवनी, एकांकी आदि के मार्गदर्शन की संक्षिप्त रूप रेखा
- ❖ मार्गदर्शकों द्वारा विषय संबंधी समस्याओं को प्रस्तुत करना, समाधान पाना।

V. पंचम दिवस–

अवधि (17) –

- पाठ–योजना, इसकी आवश्यकता, नमूना।
- इकाई–पाठ, इसकी तैयारी, प्रारूप प्रस्तुतीकरण।
- प्रारूप का लचीलापन क्यों हो? कैसा हो? इसकी आवश्यकता क्या है?
- मूल्यांकन की दृष्टि से मार्गदर्शक द्वारा पाठ–योजना में लचीलापन कैसे लाया जाए?

अवधि (18) –

- ❖ संकलनात्मक मूल्यांकन हेतु प्रश्न–पत्र का नमूना।
- ❖ किन अंशों को आधार बनाकर प्रश्न पत्र बनाए जाएँ।
- ❖ इन अंशों को किस आधार पर विभक्त कर उनका अंक विभाजन किस प्रकार किया जाए।
- ❖ अंक निर्धारण और उनका संक्षिप्तीकरण कैसे करें।

अवधि (19) –

- क्रिया–योजना का संक्षिप्त विवरण
- परस्पर चर्चा।

अवधि (20) –

- ❖ समापन समारोह।

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण हेतु समय तालिका

विषय – हिन्दी **रचना – भाग–2** **कक्षा – 9**

अवधि	1		2		3		4
समय	**सुबह 9.30 से 11.45**		**12.00 से 1.30**		**2.15 से 3.45**		**4.00 से 5.30**
प्रथम दिवस	पंजीयन और मार्गदर्शन कार्यक्रम का उद्घाटन	**चाय विराम**	मार्गदर्शकों और संसाधकों का परस्पर परिचय और वातावरण निर्माण	**भोजन विराम**	राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के ढाँचो (N.C.F.-2005) का संक्षिप्त परिचय	**चाय विराम**	सर्वशिक्षा अधिकार (R.T.E. 2009) और नौंवी कक्षा की हिन्दी पाठ्य पुस्तक
द्वितीय दिवस	• कक्षा में हिन्दी मार्गदर्शन के रचनात्मक विधान • पाठ्यपुस्तक के मूल्यों का संक्षिप्त परिचय		रचनात्मकता के लिए विविध क्रियाकलापों का परिचय, परस्पर चर्चा, शिक्षार्थियों की सहभागिता		कविता पाठ को सफल बनाने के तरीके, शिक्षार्थियों की पूर्ण सहभागिता कैसे हो?, समालोचनात्मक चर्चा		विषयाधारित चर्चा, मार्गदर्शकों के और शिक्षकों के परस्पर विचार एवं समस्या– समाधान।
तृतीय दिवस	आदर्श कविता पाठ, सहायक क्रिया कलापों द्वारा कविता पाठ की सार्थकता		प्रशिक्षकों का समूह में विभाजन, प्रत्यक्ष कविता पाठ की तैयारी, किसी एक समूह द्वारा कविता पाठ प्रस्तुतीकरण		कविता प्रस्तुतीकरण तथा अन्य समूह द्वारा निरीक्षण के बाद सफलता तथा अन्य क्रियाओं पर चर्चा		कविता के व्याकरणांशों का चयन, रोचकता, कविता सीखने का मूल्यांकन, एवं चर्चा
चतुर्थ दिवस	गद्य पाठ के उद्देश्य, पाठ का आदर्श प्रायोगिक रूप, पाठ हेतु आवश्यक उपकरण, पाठान्त में समस्या समाधान, चर्चा		सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (C.C.E.) और नवीन पाठ्य पुस्तक, मूल्यांकन के प्रकार आदि		व्याकरण कैसे सिखाएँ। सह उपकरण क्या हो ? कैसे उपयोग करें? आदि पर चर्चा		एकांकी, जीवनी आदि का मार्गदर्शन कैसे हो? परस्पर चर्चा।
पंचम दिवस	पाठ–योजना, इकाई–पाठ का प्रारूप, प्रारूप में लचीलापन कैसे और क्यों हो ? चर्चा।		संकलानात्मक मूल्यांकन हेतु प्रश्न पत्र का नमूना, मूल्यांकन, तरीका आदि।		क्रिया योजना का संक्षिप्त विवरण, परस्पर चर्चा।		समापन समारोह